नि:शुल्क वितरण हेतु

पन्द्रहवां अंक
(अक्टूबर 2015)

स्वजल समाचार

सफलता की कहानी

परियोजना प्रबन्धन इकाई | स्वजल परियोजना | पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, उत्तराखण्ड

Rashtriya Swachhta Abhiyan

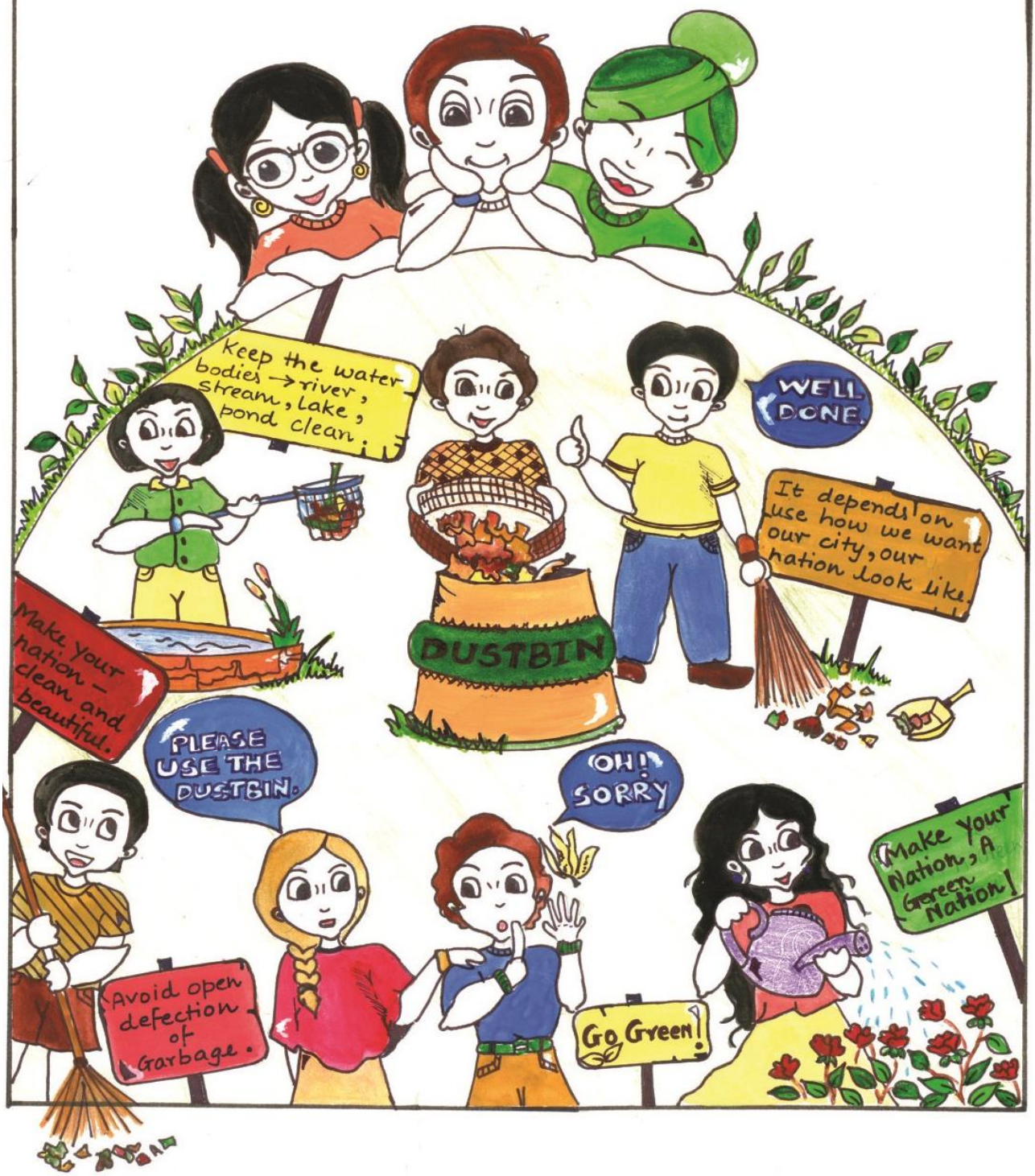

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	संघे शक्ति महाबला	3-5
2.	जहाँ चाह वहाँ राह	6-7
3.	स्वजल को सार्थक करती बंशीवाला पेयजल समिति	8-9
4.	अकेले चला था, कारवाँ जुड़ता गया	10-11
5.	गल्जवाड़ी मजबूत संकल्प से बना निर्मल ग्राम	12-13
6.	स्वच्छता की संवेदनशीलता के लिये एक पहल	14-15
7.	स्वास्थ्य की सजगता का प्रतीक: परवल पेयजल योजना	16-18
8.	सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रतीक पुरोहितवाला	19
9.	स्वच्छता की ओर अग्रसर	20-21
10.	चीसूपानी पेयजल योजना सफल प्रबन्धन की एक अनूठी पहल	22-23
11.	सिसल्डी हुआ गंदगी से मुक्त	24-25
12.	समुदाय: संचालन एक प्रयास	26-28
13.	स्वच्छता के बढ़ते कदम	29-30
14.	खुले में शौच से मुक्ति की ओर अग्रसर-ग्राम तुशराड	31
15.	पम्पिंग पेयजल योजना हिम्मतपुर मल्ला एक सफल प्रबन्धन	32-33
17.	सैक्टर रिफार्म से बदली ग्रामवासियों की तकदीर	34-35
18.	सामुहिक प्रयास से दूर हुई पेयजल समस्या	36-37
19.	पानी की समस्या से मिली मुक्ति	38-39
20.	हौसला, हिम्मत, प्रेरणा और सामूहिक सहभागिता बनती है ''मिसाल''	40-41
21.	जाख ने लिया स्वच्छता का संकल्प	42-44
22.	पंचायत द्वारा पेयजल योजना का सफल संचालन	45-47
23.	स्वच्छता की प्रेरणा ग्राम पंचायत-हल्दी	48-50
22.	झाडू का मान	51
23.	स्वच्छ पेयजल	52

संरक्षण मण्डल

1. **श्री एस. राजू**
   अपर मुख्य सचिव, पेयजल एवं स्वच्छता,
   उत्तराखण्ड शासन, देहरादून

2. **डॉ० रंजीत कुमार सिन्हा**
   निदेशक
   पी.एम.यू.-स्वजल परियोजना, देहरादून

3. **श्री पी.सी. खरे**
   वित्त नियंत्रक
   पी.एम.यू.-स्वजल परियोजना, देहरादून

सम्पादक मण्डल

श्री एस.एस. बिष्ट
इकाई समन्वयक (ऑप. एवं एस.डी.),
मुख्य सम्पादक

श्री संजय कुमार सिंह
इकाई समन्वयक (मानव संसाधन विकास),
सह सम्पादक

श्री जयप्रकाश पंवार
संचार विशेषज्ञ, सह सम्पादक

श्री संजय पांडे
प्रशिक्षण एवं संचार विशेषज्ञ, सह सम्पादक

डॉ. रमेश बडोला
पर्यावरण विशेषज्ञ, सह सम्पादक

श्री बीरेन्द्र भट्ट
सामुदायिक विकास विशेषज्ञ, सह सम्पादक

डॉ. रन्नो यादव
महिला विकास विशेषज्ञ, सह सम्पादक

श्री बी.पी.एस. भण्डारी
टंकण एवं साज-सज्जा

सम्पादकीय

सोरघाटी पिथौरागढ़ के जाख गाँव की शान्ति देवी कहती हैं कि पहले बाहर जाने में परेशानी होती थी, लेकिन जब से घर में शौचालय बना तब से अच्छा हो गया है। रात में पहले बाहर जाने से डर लगता था। गाँव के रास्तों में आजकल साफ-सफाई है, पहले रास्ते पैदल चलने लायक नहीं थे। उत्तराखण्ड राज्य के अधिकांश गाँव में अब खुले में शौच से मुक्ति हेतु आ रही इन जन जागरूकता से थोड़ा सकून तो मिलता है, लेकिन चुनौतियों का पहाड़ अभी भी भारी है। राज्य में अन्य प्रदेशों के मुकाबले शौचालयों का आच्छादन 72 फीसदी है, लेकिन जब तब सम्पूर्ण प्रदेश के घर पूर्ण रूप में शौचालय युक्त नहीं हो जाते तब तक लगातार सत्त रूप से सक्रीयता से कार्य किये जाने की जरूरत है। इस दिशा में जरूरी उपाय और कार्य युद्ध स्तर पर जारी है। इस हेतु विभिन्न चरणों में प्राथमिकता के साथ योजनायें बनाई गई हैं। प्रदेश में जो ग्राम पंचायत, न्याय पंचायत, विकासखण्ड 90 से 100 प्रतिशत आच्छादन की श्रेणी में आते हैं। यहाँ विशेष अभियान चलाकर इन ग्रामीण क्षेत्रों को पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त बनाने का संकल्प लिया गया है। वहीं दूसरी ओर अभियान में तेजी लाने के लिये 25 सितम्बर, से 31 अक्टूबर, 2015 के मध्य ''राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान'' के अन्तर्गत स्कूल बच्चों की विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे (कविता, निबन्ध, स्लोगन, लेखन, चित्रकला एवं प्रतीक चिन्ह जैसी प्रतियोगिताओं का राज्य व्यापी आयोजन कर शौच से मुक्ति हेतु शपथ कार्यक्रमों से संकल्पबद्धता बढ़ी है। प्रस्तुत अंक में परियोजना कार्यों के तहत पेयजल एवं स्वच्छता की दिशा में किये गये उल्लेखनीय कार्यों की सफलता की कहानियों को शामिल किया गया है। जो स्वच्छता के संकल्प को दोहरता है और जन-जन को प्रेरणा देता है।

सम्पादकीय टीम

संघे शक्ति महाबला

प्रस्तुत कहानी में महिलाएं एवं युवा ग्राम में एक जबरदस्त शक्ति के रूप में उभर रही है और संघे शक्ति महाबला की कहावत को सिद्व करते हुए यह बता रही है कि यदि महिलाओं को अवसर दिया जाये, तो वे स्वयं एवं समाज को एक दिशा दे सकती है। महिलाओं एवं युवाओं द्वारा किस प्रकार एकजुट होकर समाज को सामर्थवान बनाने एवं सही दिशा में ले जाने की अनूठी पहल करते हुए महिला मंगल दल एवं युवक मंगल दल अपनी शक्ति का सही उपयोग कर रहे हैं।

ग्राम पंचायत जगथाना उत्तराखण्ड राज्य के जनपद बागेश्वर के विकासखण्ड कपकोट का एक दूरस्थ गांव है। यह ग्राम जनपद मुख्यालय से 30 कि.मी. की दूरी पर चारों तरफ हरे–भरे पर्वत मालाओं से घिरा हुआ लगभग 300 परिवारों वाली ग्राम पंचायत है। ग्राम पंचायत में निवास करने वाले परिवारों की आजीविका का मुख्य साधन नौकरी, कृषि, पशुपलान व मजदूरी है। ग्राम पंचायत जगथाना में 3 प्राथमिक विद्यालय एवं एक राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय है जो ग्रामवासियों की शिक्षा आवश्यकताओं को पूर्ण करता है। निकटतम इण्टर कालेज ग्राम पंचायत से 15 कि.मी. की दूरी पर ग्राम पंचायत नानकन्यालीकोट में स्थित है तथा ग्राम पंचायत के स्वास्थ्य समस्याओं की देखभाल जनपद मुख्यालय पर स्थित अस्पताल ही करता है।

efgyk exy ny cuku dk fopkj % ग्राम पंचायत जगथाना जो कि विकासखण्ड कपकोट के दूरस्थ क्षेत्र में बसा होने के कारण बाहरी लोगों से अपरिचित जैसा ही है। समुदाय के अधिकतर पुरूष रोजी–रोटी की तलाश में गांवों से बाहर चले जाते हैं और महिलाएं घर चलाती है। उत्तराखण्ड राज्य में महिलाओं की घर चलाने एवं घेरलू कार्यों में मुख्य भूमिका होने के कारण स्वयं अपने लिये भी समय निकालना मुश्किल होता है ऐसे में सामाजिक कार्य तो बहुत दूर की बात है। अतः ग्राम पंचायत जगथाना की महिलाओं एवं युवाओं ने मिलकर वर्ष 2015 में ही अपने महिला मंगल दल एवं युवक मंगल दल का गठन किया, जिसमें उनका पूर्ण सहयोग ग्राम की महिला प्रधान श्रीमती प्रतिमा देवी ने दिया साथ ही गांव की युवा शक्ति और ग्राम के जनप्रतिनिधियों क्षेत्र पंचायत सदस्य व जिला पंचायत सदस्य के साथ–साथ ग्रामीण जनसमुदाय ने भी दिया।

शुरूआत में महिलाओं व युवाओं द्वारा नियम बनाया गया कि ग्राम पंचायत में सप्ताह में एक दिन सफाई अभियान चलाया जायेगा, जिसमें गावों के सभी रास्तों की सफाई की जायेगी इस हेतु सप्ताह में सभी सदस्यों को एक दिन दो घण्टे का समय देना होगा। इस प्रस्ताव में सभी महिलाओं एवं युवाओं द्वारा सहमति बनायी गयी। शुरूआत में कम ही लोग इस पुनीत कार्य हेतु आगे आये और महिलाओं व युवाओं का दृढ़संकल्प देखकर उनसे जुड़ने लगे इसी बीच स्वजल परियोजना के कार्यकर्ताओं द्वारा ग्राम भ्रमण के दौरान इन महिलाओं को हल्की बारिश होने के

बावजूद भी गांव के रास्तों की सफाई करते देखकर उत्सुक्तावश महिलाओं के पास जाकर उनसे बातचीत की गई तथा स्वजल परियोजना के मूल उद्देश्य lkeqnkf;d lgHkkfxrk ds nf"Vdks.k को ध्यान में रखते हुए परियोजना से संचालित कार्यक्रमों विशेष रूप से स्वच्छ भारत मिशन की जानकारी विस्तारपूर्वक प्रदान की गई तथा महिला मंगल व युवक मंगल दल से उपरोक्त कार्यक्रम के साथ जुड़ने का आह्वान किया तथा महिला मंगल दल व युवक मंगल दल ने स्वच्छता के इस पुनीत कार्य के साथ जुड़कर अपने ग्राम पंचायत का खुले में शौच की कुप्रथा को जड़ से समाप्त करने का लक्ष्य बनाया इस प्रकार ग्राम पंचायत में नव गठित महिला मंगल दल एवं युवक मंगल दल स्वजल परियोजना के साथ जुड़ गया। वर्तमान में महिला मंगल दल एवं युवक मंगल दल द्वारा ग्राम पंचायत में शौचालय विहीन परिवारों को शौचालय निर्माण हेतु अभिप्रेरित किया जाने लगा है। महिला मंगल दल एवं युवक मंगल दल के इस उत्साह को देखते हुए स्वजल परियोजना द्वारा सूचना शिक्षा एवं संचार गतिविधियों के तहत ग्राम पंचायत में नुक्कड़ नाटकों का आयोजन भी किया गया, जिसमें ग्राम पंचायत के रतन सिह दानू, महिला मंगल दल की अध्यक्षा, बसन्ती देवी व युवक मंगल दल के अध्यक्ष पदम सिंह बघरी द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गयी। स्वजल परियोजना का समुदाय के साथ जुड़ाव को देखते हुए महिला मंगल दल व युवक मंगल दल द्वारा इस परियोजना को सिर माथे पर लिया है तथा xkeh iapk;r dks [kqys esa 'kkSp dh dqiFkk dks [kRe djus dk lkdYi Hkh fy;k gS, साथ ही महिला मंगल दल द्वारा ग्राम के विद्यालय रास्तों के साथ–साथ वृक्षारोपण, ग्राम पंचायत में शराबबंदी जैसे कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है आज ग्राम के दुकानों में न तो ताश खेलते लोग ओर न ही शाम को शराब पीकर हल्ला करते हुए लोग दिखाई देते है बल्कि ग्राम में स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक गणेश पाण्डे जी का कहना है कि वास्वत में जब से ग्राम की महिलाएं व युवा संगठित हुए हैं, ग्राम में एक नये माहौल का निर्माण हुआ है। उनके द्वारा भी विद्यालय की स्वच्छता देखने योग्य है प्रतिदिन सभी बच्चों द्वारा नियमित रूप से विद्यालय की साफ सफाई की जाती है एवं विद्यालय में भी बच्चों द्वारा शौचालय का नियमित प्रयोग किया जाता है। वर्तमान में ग्राम पंचायत के 60 प्रतिशत परिवारों द्वारा शौचालय का निर्माण कर लिया गया है तथा शेष परिवारों द्वारा शौचालय निर्माण का कार्य किया जा रहा है।

ग्राम पंचायत जगथाना का महिला मंगल दल एवं युवक मंगल दल अभी अपने बाल्यकाल में है मगर यदि ग्रामवासियों व युवाओं का ऐसा सहयोग ग्रामवासियों द्वारा किया जाता रहेगा, तो वह दिन दूर नहीं जब ग्राम पंचायत जगथाना की महिलाएं इस कहावत l?kq 'kfDr egkcyh को चरितार्थ करेंगी एवं ग्राम पंचायत जगथाना की महिलाओं के इस संगठित प्रयास से हमारा समाज विकास की नई उंचाईयों तक पहुँच पायेगा। अन्त में nsoh uUnu 'kekZ mQZ nhiUnq की इन पंक्तियों के साथ, एक नयी आशा व विश्वास के साथ कि ग्राम पंचायत जगथाना का महिला मंगल दल अवश्य ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करें?

प्रतिदिन सुनते हैं खबरें, देखती हैं नजरें,
महिलाओं पर हो रहे नूतन अत्याचारों की,

शुद्ध अन्तःकरण से गूंज उठती हैं आवाजें,
हृदय तो एक है, ओर पुकार हजारों की,

इस अखिल विश्व को सदैव दिया है,
नारी ने एक अनुपम सम्मान,

खोकर स्वयं भी अमूल्य जीवन अपना,
मानवता को प्रतिफल प्रतिफल दिया है वरदान।

vkHkkj% श्रीमती प्रतिमा देवी, प्रधान ग्राम पंचायत, श्रीमती बसन्ती देवी, अध्यक्षा महिला मंगल दल, श्री रतन सिंह दानू, सामाजिक कार्यकर्ता, श्री पदम सिंह बघरी, अध्यक्ष युक्त मंगल दल एवं समस्त ग्रामवासी जगथाना।

fxfjtk 'kdj HkV~V] lkeqnkf;d fodkl fo'ks"kK]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना, बागेश्वर

जहाँ चाह वहाँ राह

ग्राम पंचायत लेटी बाबा बागनाथ की नगरी जनपद बागेश्वर विकासखण्ड बागेश्वर से 12 कि.मी. दूरी पर समुद्र तट से लगभग 1800 मी. की ऊँचाई पर स्थित है इस गांव में सामान्य वर्ग के 95 परिवार निवास करते है, जिसमें अधिकांश परिवार बी.पी.एल. श्रेणी के है। यह गॉव चारों ओर वनों से घिरा है। स्वच्छ–शांत वातावरण, एवं हरियाली से परिपूर्ण है। इस गांव में एक प्राथमिक विद्यालय एवं एक उच्च माध्यमिक विद्यालय है गांव में विद्युत की सुचारू व्यवस्था एवं पीने का स्वच्छ पानी तथा ग्रामवासियों के अथक प्रयासों से वर्तमान में ग्राम में कोई भी परिवार खुले में शौच नहीं करता है। तथा ग्राम पंचायत सड़क से जुड़ी है। ग्राम पंचायतवासियों के इस अथक प्रयासों व गांवो की इस बदली तस्वीर को देखते हुए पूर्व में गांव से पलायन कर चुके परिवार आज पुनः गांव की तरफ वापस आ रहे है तथा अपनी माटी से जुड़कर गर्व का अनुभव करते हैं।

ग्राम पंचायत लेटी में पूर्व में पानी की बहुत समस्या थी, ग्राम पंचायत के लोगों का सारा समय पानी की व्यवस्था में ही लग जाता था क्योंकि ग्राम पंचायत लेटी, चोटी में बसा हुआ होने के कारण कोई स्रोत भी उपलब्ध नहीं था, मात्र दो नौलों पर ही पूरी ग्राम पंचायत पानी हेतु निर्भर रहती थी इस हेतु परिवार का एक सदस्य वर्तनों के साथ पानी के नौले पर ही रहता था। ग्राम पंचायत से 2 कि.मी. की दूरी पर एक स्रोत था गर्मी के दिनों में ग्राम की महिलाओं एवं बच्चों को कड़ी धूप में पानी हेतु इसी स्रोत का सहारा रहता था, इस भीषण समस्या को देखते हुए तत्कालीन ग्राम प्रधान श्री त्रिलोक सिंह जी द्वारा उक्त परेशानी को देखते हुए पूरी ग्राम पंचायत को एकत्रित कर पंचायत की कई बैठकों के उपरान्त तथा उत्तराखण्ड जल निगम एवं उत्तराखण्ड जल संस्थान द्वारा असमर्थता जाहिर करने के उपरान्त यह तय हुआ कि ग्राम पंचायत लेटी से 5 कि.मी. की दूरी पर गैगाड़ स्रोत से पानी लाने का निश्चय किया गया तथा तय हुआ कि सारे ग्राम पंचायत के सारे परिवार एकजुट होकर श्रमदान के माध्यम से पानी लायेगें। ग्राम पंचायत लेटी के लोगों द्वारा सहभागिता का अनुपम परिचय देते हुए काम का बीड़ा उठाया तथा खुदान कार्य शुरू किया गया तथा लकड़ी के अनेक कुरौट (पाईप–नुमा) बनाये गये तथा विशाल चट्टानों को काटकर नाले बनाये गये हैं। इसके फलस्वरूप एक वर्ष की कड़ी मेहनत के उपरान्त ग्रामवासी 3.5 कि.मी. तक पानी लाने में सफल हो गये इस अद्भुत प्रयास की चारों तरफ चर्चा होने लगी ग्राम पंचायत की इस अद्भुत पहल को देखते हुए उत्तराखण्ड जल निगम द्वारा ग्रामवासियों से सम्पर्क कर पेयजल योजना हेतु पाईप देने का प्रस्ताव रखा उसमें भी ग्रामवासियों द्वारा अंशदान किया गया इस तरह ग्राम लेटी में पानी पहुँचा। समय बीतने के साथ ग्राम पंचायत में परिवारों की संख्या बड़ गयी तथा पाईप लाईन क्षतिग्रस्त हो गई। एक बार पुनः ग्राम पंचायत में पानी का संकट गहराने लगा था। इन सब को देखते हुए ग्राम पंचायत की मांग के आधार पर उत्तराखण्ड सरकार द्वारा संचालित समुदाय आधारित क्षेत्र सुधार परियोजना सैक्टर कार्यक्रम के अन्तर्गत उत्तराखण्ड जल संस्थान द्वारा बैच–2 वर्ष 2007 के अन्तर्गत पेयजल योजना निर्माण हेतु ग्राम लेटी का चयन किया गया, जिसमें ग्राम पंचायत द्वारा श्रमदान एवं अशंदान हेतु अपनी सहमति व्यक्त की गई तथा ग्राम पंचायत स्तर पर कई बार बैठकें होने के उपरान्त समितियों का गठन कर नियोजन चरण की गतिविधियों को पूर्ण किया गया। सहयोगी संस्था द्वारा योजना के क्रियान्वयन चरण के कार्य के बीच में ` 2.25 हजार का गबन करने पर ग्रामवासियों द्वारा संगठित होकर तथा अपने तत्कालीन

प्रधान के सहयोग से कानूनी लड़ाई जीत कर उक्त सहयोगी संस्था से पैसा वापस करवाया गया तथा अपनी योजना का कार्य सुचारु रूप से पूर्ण किया। इसी बीच स्वजल परियोजना के कार्यकर्ताओं द्वारा ग्राम पंचायत का भ्रमण कर तत्कालीन प्रधान श्री गोविन्द सिंह की अध्यक्षता में एक बैठक का आयोजन कर स्वच्छ भारत मिशन तथा सैक्टर कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी दी। ग्रामवासियों द्वारा स्वच्छता कार्यक्रम एवं निर्माणाधीन पेयजल योजना का संचालन एवं रखरखाव के विषय में पूर्ण जानकारी दी तब ग्रामवासियों द्वारा संकल्प किया गया कि वह योजना का रखरखाव तो करेगें ही साथ ही साथ स्वच्छता कार्यक्रम को स्वीकार कर अपने ग्राम को एक नयी पहचान देगें। तत्कालीन प्रधान व ग्रामवासियों द्वारा बताया गया कि ग्राम पंचायत में पहला शौचालय पूर्व प्रधान श्री गोविन्द सिंह जी द्वारा 1994 में बनाया गया तो गांवों के सभी लोगों ने प्रतिक्रिया की कि आपने अपने घर में गन्दगी का कारखाना बना दिया है, इससे सारे गांव में मच्छर पैदा हो जायेंगे तथा बीमारी होने का भी डर है, क्या कोई इस तरह मल को घर के पास गड्ढा बनाकर रखता है श्री गोविन्द सिंह जी आर्मी से सेवानिवृत्त थे, उन्होंने ग्रामवासियों को समझाया तब से ग्राम में कुछ परिवारों द्वारा अपने शौचालयों का निर्माण किया गया मगर आज की बैठक का असर ग्राम पंचायत के 23 वर्षीय युवा प्रधान श्री गोविन्द सिंह पर सबसे ज्यादा रहा उन्होंने प्रेरित होकर ग्रामवासियों को संगठित कर स्वजल परियोजना के अथक प्रयासों से 62 परिवारों द्वारा एक वर्ष के अन्दर शौचालय निर्माण कार्य कर लिया गया तथा अब उनको लगने लगा कि शौचालय निर्माण से गन्दगी नहीं होती है, बल्कि गन्दगी दूर होती है। इस तरह वर्तमान में 87 परिवारों द्वारा शौचालयों का निर्माण कार्य पूर्ण कर लिया गया है तथा शेष परिवारों द्वारा भी शौचालय निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया जा चुका है। मगर वर्तमान में ग्राम पंचायत का कोई भी परिवार खुले में शौच नहीं करता है निर्माणाधीन शौचालय वाले परिवार अपने चाचा या बड़े भाई के परिवार का शौचालय इस्तेमाल करते है। ग्राम पंचायत की इस पहल को देखते हुए स्वजल परियोजना एवं ग्राम पंचायत की वर्तमान प्रधान श्रीमती दीपा देवी के निरन्तर प्रयासों को देखते हुए ग्राम पंचायत का चयन ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबन्धन कार्य हेतु भी किया गया, जिसके अन्तर्गत ग्राम पंचायत में कूड़ा निस्तारण हेतु कूड़े–गड्ढे एवं गोबर इत्यादि के निपटान हेतु खाद गड्ढों एवं तरल अपशिष्ट के निपटान हेतु नालियों का निर्माण कार्य किया जा रहा है। आज ग्राम पंचायत वालों को फर्क महसूस होता है कि उनकी ग्राम पंचायत में कोई भी परिवार खुले में शौच नहीं करता है एवं न ही कूड़ा जहाँ–तहाँ पड़ा रहता है। वर्तमान प्रधान श्रीमती दीपा देवी का कहना है कि स्वजल परियोजना के सहयोग से आज उनका गॉव निर्मल ग्राम की श्रेणी में आ गया है। आज ग्राम पंचायत के लोग स्वजल परियोजना का आभार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि यदि स्वजल परियोजना द्वारा सही समय पर जानकारी नहीं दी जाती तो आज वह इतनी सफलतापूर्वक अपनी पेयजल योजना का रखरखाव नहीं कर पाते और न ही ग्राम पंचायत के संचालन एवं रखरखाव खाते में `29 हजार जमा कर पाते हैं। ग्रामवासियों द्वारा श्री पान सिंह जी को `1500 मासिक देकर योजना के देखरेख की जिम्मेदारी भी सौंपी है साथ ही ग्राम के एक व्यक्ति को रोजगार भी दिया जा रहा है। पेयजल के महत्व को समझते हुए ग्रामवासियों द्वारा अपने दो नौले का भी जीर्णोधार कर उनका उपयोग लगातार किया जाता है। ग्रामवासियों द्वारा प्रति परिवार `20 मासिक जमा किया जाता है। ग्रामवासियों के इस प्रयासों को देखते हुए यह कहावत सिद्वहोती है कि tgk pkg ogk jkgA

vkHkkj% श्रीमती दीपा देवी (ग्राम प्रधान लेटी) श्री गोविन्द सिंह (पूर्व प्रधान लेटी) एवं समस्त ग्रामवासी लेटी।

fxfjtk 'kdj HkV~V] lkenkf;d fodkl fo'ks"kK]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना, बागेश्वर

स्वजल को सार्थक करती बंशीवाला पेयजल समिति

जनपद देहरादून से 11 कि.मी. की दूरी पर स्थित ग्राम पंचायत–झाझरा में सैक्टर कार्यक्रम के अन्तर्गत निर्मित बंशीवाला पेयजल योजना जनपद की अन्य ग्राम पंचायतों के लिये पेयजल योजना के उत्तम रखरखाव एवं सफल संचालन का अद्वितीय उदाहरण है। बंशीवाला पेयजल योजना ने क्षेत्र में अपनी यह पहचान ग्रामवासियों की स्वच्छ पेयजल के प्रति जागरूकता के कारण बनायी है। ग्राम पंचायत झाझरा के ग्राम बंशीवाला में पेयजल योजना के निर्माण से पूर्व बंशीवाला के समस्त ग्रामवासी पेयजल हेतु जल निगम द्वारा लगाये गये तीन हैण्डपम्पों पर निर्भर थे। श्रीमती मीरा देवी के अनुसार ग्रामवासियों का विशेषकर महिलाओं का अधिकॉश समय हैण्डपम्प से पानी ले जाने मे व्यतीत होता था, जिससे घर के अन्य कार्य बाधित होते थे।

c'khokyk i;ty ;kstuk] xke ipk;r&>k>jk] ftyk&nsgjknu

मीरा देवी की तरह ही बंशीवाला की अन्य महिलायें भी पेयजल योजना के निर्माण से पूर्व की स्थिति से अवगत कराते हुए बताती है कि पानी के लिये सुबह उठते ही हैण्डपम्प पर लाईन लगानी पड़ती थी कभी कभी तो पहले पानी भरने के लिये विवाद भी हो जाता था। ग्राम बंशीवाला में पेयजल के लिये दिन प्रतिदिन के हो रहे विवादों को देखते हुए वर्ष 2011 मे सैक्टर कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्राम पंचायत झाझरा के दो तोक क्रमशः बंशीवाला एवं हेडवाली हेतु बंशीवाला पेयजल योजना का निर्माण कार्य उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति एवं ग्रामवासियों के सहयोग से पूर्ण किया गया।

पेयजल योजना के फिटर श्री नरेश कुमार बताते है कि एक दिन भारी वाहन के आने से बंशीवाला के कुछ पाईप क्षतिग्रस्त हो गयी, जिस कारण बंशीवाला के कुछ परिवारों में पेयजल आपूर्ति नही हो पायी। पाईपलाईन के ठीक होने तक ग्राम प्रधान द्वारा उन परिवारों के यहॉ पेयजल योजना से टैंकरों के माध्यम से पानी भरकर उन उपभोक्ताओं के घर तक पहुँचाया गया। श्री नरेश कुमार गर्व से कहते है कि बंशीवाला के ग्रामवासी एक दिन भी बंशीवाला पेयजल योजना के बिना नही रह सकते।

ग्राम बंशीवाला के 112 परिवारों के लिये दो तोक बंशीवाला एवं हेडवाली हेतु र्निमित बंशीवाला पेयजल योजना से वर्तमान में 121 परिवार लाभान्वित हो रहे हैं। पेयजल योजना के सफल संचालन एवं रखरखाव का श्रेय ग्राम प्रधान/अध्यक्ष उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति श्री रूप सिंह थापा को देते हुए कोषाध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद बताते हैं कि ग्राम प्रधान

के अभिनव प्रयासों तथा समिति एवं ग्रामवासियों के सहयोग से हमारी यह योजना क्षेत्र की बेहतरीन योजनाओं मे गिनी जाती है।

बंशीवाला पेयजल योजना का संचालन एवं रखरखाव पूर्ण रूप से उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति के द्वारा सफलतापूर्वक किया जा रहा है। योजना के संचालन हेतु समिति के द्वारा प्रत्येक परिवार से `125.00 मासिक जल शुल्क तय किया गया है, साथ ही पेयजल योजना से नये संयोजन हेतु `1400.00 एस.सी. परिवारों से `1700.00 सामान्य परिवारों से तय किये गये है। संचालन एवं रखरखाव से एकत्र धनराशि का व्यय योजना में नियुक्त फिटर के मानदेय, बिजली का बिल, क्लोरीनेशन तथा टूट–फूट को ठीक करने में किया जाता है। समिति द्वारा रखरखाव खाते में एकत्र की गयी धनराशि से बंशीवाला में 150 मीटर नयी लाईन बिछायी गयी तथा पानी के सुचारू आपूर्ति हेतु 14 पाईप बदलने का कार्य किया गया।

ग्राम प्रधान द्वारा योजना की आय बढ़ाने हेतु समिति के सहयोग से नव परिर्वतनशीन प्रयोग किये जा रहे है। समिति द्वारा ग्राम पंचायत में निर्माण कार्य में पानी उपलब्ध कराने हेतु `50 प्रति टैंकर का शुल्क एवं शादी विवाहो में एक घण्टा मोटर ज्यादा चलाने पर परिवार से `70 अतिरिक्त का शुल्क तय किया गया है। कोषाध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद बताते है कि ग्राम प्रधान द्वारा पेयजल योजना की आय बढ़ाने हेतु किये गये नये परिर्वतनशील प्रयासों से `5000.00 से 6000.00 तक की मासिक बढ़ोत्तरी योजना के रखरखाव खाते में हो जाती है।

c'khokyk vkoj gM V d]
xke ipk;r&>k>jk] ftyk&nsgjknu

बंशीवाला पेयजल योजना ने ग्रामवासियों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के साथ–साथ सामाजिक रूप से भी एक दूसरे को जोड़ने का कार्य किया है, जिसका उत्कृष्ट उदाहरण ग्राम पंचायत में पेयजल योजना निर्माण हेतु वर्ष 2008 में गठित समिति के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद एवं फिटर श्री नरेश कुमार के द्वारा पारदर्शी एवं निष्पक्ष रूप से कार्य करने के कारण आज भी उपभोक्ताओं के द्वारा ससम्मान स्वीकार किया गया है, साथ ही समिति के सक्रिय सदस्यों के रूप में वर्तमान प्रधान एवं समस्त उपसमिति सदस्यों के साथ–साथ पूर्व प्रधानो क्षेत्र पंचायत सदस्यों एवं पूर्व जिला पंचायत सदस्यों के द्वारा एकजुटता के साथ पेयजल योजना के संचालन हेतु सक्रिय योगदान दिया जा रहा है। जिस कारण यह योजना पेयजल आपूर्ति के साथ–साथ निर्विवाद रूप से संचालित की जा रही है।

बंशीवाला पेयजल समिति ने सैक्टर कार्यक्रम के मूल मंत्र सामुदायिक सहभागिता, मितव्ययिता, पारदर्शिता के आधार पर योजना निर्माण कर एवं वर्तमान में सफल संचालन करके स्वजल का अर्थ पूर्ण रूप से सार्थक कर दिखाया है।

Mk- uhye ir] i;kZoj.k fo'ks"kK]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना, देहरादून

अकेले चला था, कारवाँ जुड़ता गया

विकासखण्ड सहसपुर में संभवत ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो पूर्व ग्राम प्रधान श्री रूमी राम जायसवाल के नाम से परिचित न हो। मेरी मुलाकात ग्राम प्रधान श्री रूमी राम से वर्ष 2010 में विकासखण्ड सहसपुर में क्षेत्र पंचायत की बैठक में हुई। बैठक में उनके द्वारा ग्राम पंचायत की स्वच्छता की स्थिति के बारे में हमें अवगत कराया कि ग्राम पंचायत में कई ऐसे परिवार है जो खुले में शौच करते हैं तथा स्वच्छता एवं शौचालय निर्माण के प्रति जागरूक नहीं है। अगले ही दिन ग्राम पंचायत छरबा में ग्रामवासियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने हेतु एक कार्यशाला रखी गयी। कार्यशाला में ग्रामवासियों को स्वच्छता का महत्व बताते हुए शौचालय बनाने हेतु जागरूक किया गया। शौचालय विहीन परिवारों के द्वारा खुले में किये गये मल की गणना, मल का मक्खियों एवं अन्य माध्यमों से मुँह तक पहुँचने की प्रक्रिया को बताकर ग्रामवासियों में खुले में शौच के प्रति घृणा एवं शौचालय निर्माण के प्रति जागरूकता उत्पन्न की गयी। खुले में शौच करने के प्रति घृणा व्यक्त करते हुए कई परिवारों के द्वारा उसी समय शौचालय निर्माण का संकल्प लिया गया, जिसे देखकर रूमीराम में स्वच्छता के प्रति एक जोश उत्पन्न हुआ, जो एक स्वाभाविक नेता के रूप में सामने आया। पूर्व वार्ड सदस्य मोना बताती है "प्रधान जी ने उसी दिन शाम को सभी वार्ड सदस्यों की बैठक ली। बैठक में उन्होंने सभी वार्ड सदस्यों के साथ ग्राम पंचायत की स्वच्छता हेतु कार्ययोजना बनायी, उन्होंने सभी वार्ड सदस्यों को अपने–अपने वार्ड के खुले में शौच हेतु जा रहे परिवारों का सर्वे करने हेतु कहा गया" जब सभी वार्ड का सर्वे निकलकर आया तो ग्राम प्रधान ने वार्ड सदस्यों के साथ जाकर प्रत्येक दिन शौचालय विहीन परिवारों को जागरूक करना प्रारम्भ किया। स्वच्छता के प्रति जागरूक करने हेतु उनके द्वारा स्वजल का भी सहयोग लिया गया। स्वजल द्वारा भी समय–समय पर ग्राम पंचायत छरबा में स्वच्छता संबंधी विभिन्न टूल्स जैसे सरार स्कूलों में स्वच्छता संबंधी प्रतियोगिता रैली नुक्कड़ नाटक एवं दीवार लेखन के माध्यम से ग्रामवासियों को जागरूक किया गया।

श्री रूमीराम जायसवाल द्वारा सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान वर्तमान में स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के अन्तर्गत ग्राम पंचायत में चिन्हित शौचालय विहीन बी.पी.एल. परिवारों का शौचालय निर्माण कर लाभार्थियों को प्रोत्साहन राशि से पुरस्कृत किया गया। रूमीराम द्वारा बहुत गरीब ए.पी.एल. परिवारों की मदद् स्थानीय संस्था एडोप्ट के माध्यम से लाभार्थी को शौचालय निर्माण हेतु सामग्री उपलब्ध करवाकर की गयी। पूर्व उपप्रधान नीलम के अनुसार "रूमीराम हर समय ग्राम पंचायत की स्वच्छता को लेकर ही बात किया करते थे। वो कहते थे कि अगर ग्राम पंचायत के सभी शौचालय विहीन परिवारों के पास शौचालय सुविधा उपलब्ध हों जाये, तो हमारी ग्राम पंचायत स्वच्छता की पहली सीढ़ी पार कर लेगी"। स्वजल परियोजना अन्य गैर सरकारी संगठनों ग्राम प्रधान द्वारा किये गये अथक प्रयास से ग्राम पंचायत में वर्ष 2012 में सभी शौचालय विहीन परिवारों के पास शौचालय सुविधा उपलब्ध करने का लक्ष्य प्राप्त हुआ। शौचालय का लक्ष्य प्राप्त करने के पश्चात् श्री रूमीराम के द्वारा ग्राम पंचायत में सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत ग्राम

पंचायत में स्वच्छता बनाये रखने हेतु 36 कूड़ेदानों का निर्माण करवाया गया। रूमीराम द्वारा ग्राम पंचायत में स्वच्छता बनाये रखने के लिये प्रत्येक दिन वार्डवार स्वच्छता अभियान चलाया जाने लगा। स्वच्छता अभियान में उनके द्वारा गली मोहल्लों की सफाई, कूड़ेदानों की सफाई का कार्य कर ग्रामवासियों को ग्राम पंचायत की स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। श्री अनिल कुमार बताते है कि Þप्रधान जी अकेले ही गॉव में घर–घर जाकर ग्रामवासियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करते थे, कहीं भी कूड़ा दिखता तो स्वयं ही सफाई करना प्रारम्भ कर देते थे। प्रधान जी को देखते हुए हम सब वार्ड सदस्यों ने एकत्र होकर नियमित रूप से प्रत्येक वार्ड की सफाई कर ग्रामवासियों को जागरूक करना प्रारम्भ किया। धीरे–धीरे ग्रामवासियों ने जागरूक होकर अपने–अपने वार्डों की सफाई स्वयं करना शुरू कर दिया"। इस अभियान में ग्राम पंचायत के बच्चों तथा महिलाओं ने विशेष योगदान दिया। रूमीराम बताते है कि ग्राम पंचायत को स्वच्छ रखने में ग्राम पंचायत के वार्ड सदस्यों ग्रामवासियो एवं ग्राम पंचायत में संचालित सरकारी एवं व्यक्तिगत विद्यालयों के प्रधानाचार्य/ प्रधानाध्यापकों का भी योगदान है, जिनके माध्यम से बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई। रुमी राम द्वारा ग्राम सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत ग्राम पंचायत छरबा के विद्यालयों में बालक/बालिकाओं हेतु शौचालय का निर्माण करवाया गया। श्री रूमी राम के ये शब्द Þvdyk pyk Fkk dkjok tMrk x;kß ग्रामवासियों के सहयोग से वर्ष 2012 में सार्थक हुआ। स्वच्छता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों को देखतें हुए ipk;rh jkt e=ky; Hkkjr ljdkj d }kjk o"k 2012 e xke ipk;r Njck dk ipk;r l'kDrhdj.k ijLdkj से सम्मानित किया गया। ग्राम पंचायत को स्वच्छता के प्रति जागरुक करने की ललक उनमें स्वाभाविक नेता के रूप परिणित हुई फिर उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा चाहे, नशा मुक्ति का क्षेत्र हो, पर्यावरण सरंक्षण का क्षेत्र हो, गौरक्षा का क्षेत्र हो या फिर कोका कोला प्लांट का अपनी ग्राम पंचायत में विरोध का क्षेत्र हो, वे सभी में अग्रणीय रहे। विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु उन्हें 02 बार राष्ट्रीय स्तरीय एवं 07 बार राज्य स्तरीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। कुछ दिनों पहले ही ग्राम पंचायत छरबा में उनके यहॉ पुनः जाने का अवसर प्राप्त हुआ तो देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि आज भी रूमीराम जायसवाल स्वाभाविक नेता के रूप में ग्रामवासियों को कूड़े के उचित निस्तारण एवं वर्मी कम्पोस्ट बनाने की विधि बता रहे थे। उन्होंने हमें बताया कि अब मेरा लक्ष्य ग्रामवासियों को कम लागत में जैविक खाद बनाने की विधियों के बारे में बताकर जागरूक करना है। उनके द्वारा कम लागत व स्थानीय स्थितियों के अनुसार वर्मी कम्पोसटिंग की जा रही है। ग्रामवासियों के सहयोग से संरक्षित की गयी 376 गायों के गोबर से बायो गैस प्लांट तथा उत्तराखण्ड अक्षय उर्जा उरेडा द्वारा 35 घनमीटर बायोगैस संयंत्र द्वारा 4 किलोवाट क्षमता का विद्युत उत्पादन प्लांट लगया गया है, जिसका प्रयोग गौशाला में विधुतीकरण व एवं अन्य व्यवस्थाओं के लिये किया जाता है। इनके द्वारा ग्राम पंचायत में महिलाओं को मशरूम उत्पादन हेतु प्रशिक्षित भी किया गया है। उनके द्वारा भविष्य में ग्राम पंचायत की महिलाओं एवं बेरोजगार युवकों को मशरूम उत्पादन एवं जैविक खाद उत्पादन से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाने की योजना है।

Mk- uhye ir] i;koj.k fo'k"kK]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना,
देहरादून

गल्जवाड़ी मजबूत संकल्प से बना निर्मल ग्राम

प्रकृति के नैसर्गिक सौन्दर्य के बीच जनपद देहरादून से 12 कि.मी. की दूरी पर स्थित ग्राम पंचायत गल्जवाडी वर्ष 2009 में निर्मल ग्राम पंचायत से सम्मानित ग्राम पंचायत है। ग्राम पंचायत में आज भी स्वच्छता का स्तर बरकरार है, जिसका श्रेय ग्राम प्रधान श्रीमती लीला शर्मा पंचायत की महिलाओं एवं बच्चों को जाता है। वर्ष 2008 में ग्राम पंचायत गल्जवाडी में सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान प्रारम्भ किया गया। शुरू में ग्राम पंचायत गल्जवाड़ी में स्वच्छता की स्थिति अच्छी नहीं थी। गॉव में कई परिवार ऐसे थे, जिनके पास शौचालयों की व्यवस्था नहीं थी। ग्रामवासी स्वच्छता एवं शौचालय बनाने के लिये जागरूक नहीं थे। गॉव का नदी के किनारे एवं जंगल के समीप होने के कारण अधिकतर शौचालय विहीन परिवारों का यह मत था कि उन्हें शौचालय की आवश्यकता नहीं है, ऐसे में ग्रामवासियों विशेषकर शौचालय विहीन परिवारों की खुले में शौच करने की आदत को बदल पाना बेहद कठिन कार्य था। ग्राम प्रधान स्वच्छता को लेकर बेहद चिन्तित थी वो अपनी ग्राम पंचायत को निर्मल ग्राम पंचायत के रूप में देखना चाहती थी। ग्राम प्रधान श्रीमती लीला शर्मा के जज्बे को देखकर स्वजल प्रतिनिधियों ने ग्राम प्रधान के साथ मिलकर ग्राम पंचायत की महिलाओं के साथ बैठके कर स्वच्छता के प्रति जागरूक किया तथा स्वच्छता अभियान में बच्चों को भी सम्मिल्लित किया गया। स्कूली बच्चों एवं महिलाओं के साथ मिलकर ग्राम प्रधान द्वारा ग्रामवासियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। ग्राम प्रधान द्वारा महिलाओं एवं बच्चों के माध्यम से चलाये गये अभियान से जागरूक होकर शौचालय विहीन कुछ परिवारों ने शौचालय बनाने प्रारम्भ किये। ग्राम प्रधान बेहद खुश थी कि उनके द्वारा स्वजल के साथ मिलकर किये गये प्रयास परिणाम दे रहे थे, परन्तु वो कुछ अलग करना चाहती थी। इसी बीच जनपद देहरादून में ग्राम प्रधानों की कार्यशाला रखी गयी, जिसमें ग्राम प्रधानों को सम्पूर्ण स्वच्छता पर आधारित महाराष्ट्र के नान्देण जिले पर फिल्मांकित ''परिवर्तन की लहर'' डाक्यूमेंटरी दिखायी गयी, जिसमें नान्देण जिले के डिम्पल गॉव में बच्चों ने टोली बनाकर खुले में शौच करने वालों को शर्मिंदा कर ग्राम पंचायत को खुले में शौच से मुक्त किया। ग्राम प्रधान को जैसे संजीवनी मिल गयी उन्होंने ग्राम पंचायत में पहुँचकर बच्चों एवं महिलाओं की टोली बनायी और निश्चित किया कि रोज सुबह टोली नदी के किनारे जायेगी और खुले में शौच करने वाले ग्रामवासियों को शर्मिंदगी का एहसास करायेगी। इसके अतिरिक्त खुले में शौच करने वाले व्यक्तियों पर दण्ड भी तय करेगी।

आज भी ग्राम प्रधान की ऑखें खुशी से नम हो जाती है जब वो बताती है कि किस तरह महिलाओं एवं बच्चों ने ग्राम पंचायत को स्वच्छ बनाने में उनका कदम कदम पर साथ दिया। वे एक वाकया याद करते हुए बताती है कि जब टोली सुबह–सुबह नदी किनारे पहुँचकर खुले में शौच करने जाती थी, तो बच्चे चिल्लाने लगते थे, तभी नदी किनारे शौच के लिये आये गॉव के एक बुजुर्ग व्यक्ति ने कहा कि चाहते हम भी नहीं है नदी को मैला करें, परन्तु क्या करें शौचालय

बनाने का सामर्थ्य नहीं है। ग्राम प्रधान ने जब यह सुना तो प्रधान ने ग्राम पंचायत के परिवार जिनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, कि मदद कर शौचालय निर्माण में सहयोग किया। ग्राम प्रधान के समर्पण एवं मेहनत का परिणाम है कि एक वर्ष के अथक प्रयास के पश्चात ग्राम पंचायत वर्ष 2009 में निर्मल ग्राम पंचायत से सम्मानित हुई। ग्राम पंचायत के निर्मल ग्राम पुरस्कार से सम्मानित होने पर महिलाये एवं बच्चे बेहद खुश हुए उन्होंने अपनी खुशी ग्राम पंचायत में "निर्मल भयो, निर्मल भयो, हमरो ग्राम पंचायत गल्जवाड़ी निर्मल भयो" के नारे लगाकर व्यक्त की।

ग्राम पंचायत गल्जवाडी आज स्वच्छता के स्तर को संजोए हुए है। ग्राम पंचायत के स्कूलों में स्वच्छता एवं बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता पहले से बेहतर है। बच्चों के द्वारा प्रार्थना में स्वच्छता का संकल्प लिया जाता है। वर्तमान में भी श्रीमती लीला शर्मा ग्राम पंचायत की प्रधान है तथा पूर्व की भांति आज भी ग्राम पंचायत की स्वच्छता को प्राथमिकता पर रखते हुए कहती हैं।

egur dj ik;k g ;g lEEkku geu]
bl lEeku dk geu vkj c<kuk g]
LoPNrk d {k= e vkx Hkh uke dekuk gA

Mk- uhye irr] i;koj.k fo'k"kK]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना,
देहरादून

स्वच्छता की संवेदनशीलता के लिये एक पहल

uu unh d: fdukj: fLFkr ccyh nsoh dk ?kj

ग्राम पंचायत हरियावाला खुर्द देहरादून से 13 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। वर्ष 2009 में ग्राम पंचायत सम्पूर्ण स्वच्छता के सभी मानकों को पूर्ण करते हुए निर्मल ग्राम पंचायत से सम्मानित हुयी थी। ग्राम पंचायत हरियावाला खुर्द के जैन्तनवाला तोक में बबली देवी अपने तीन बच्चों (दो पुत्रों एवं एक पुत्री) के साथ रहती है। बबली देवी के दोनो पुत्र जिनकी उम्र क्रमशः 18 एवं 16 वर्ष है मानसिक रूप से मन्द है। वर्ष 2014 तक बबली देवी के घर पर शौचालय होने के कारण घर के सभी सदस्य शौचालय का ही उपयोग करते थे। श्रीमती बबली देवी का घर नून नदी के किनारे पर होने के कारण वर्ष 2014 में आयी भारी बरसात के दौरान आयी आपदा के कारण शौचालय पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हो गया था।

बबली देवी बताती है कि "पति के न होने से परिवार के गुजर बसर के लिए बाहर घरों में काम करने के लिए जाना पड़ता है। शौचालय क्षतिग्रस्त होने से बड़ी परेशानी होती है, बच्चे शौच के लिये बाहर जाते है तो जंगली जानवरों का डर तथा नदी में गिरने का भी डर बना रहता है। घर से बाहर रहने पर हर समय बच्चों की चिन्ता लगी रहती है। आपदा ने सब समाप्त कर दिया कम से कम शौचालय बच जाता" यह कह कर वह भावुक हो जाती है। शौचालय बनाने हेतु ग्राम प्रधान एवं बबली देवी द्वारा स्वजल कार्यालय से सम्पर्क कर स्थिति से अवगत कराया गया। जब ग्राम पंचायत में बबली देवी के घर पर परियोजना प्रबन्धक सुनीता भटट् के साथ भ्रमण किया गया तो पाया कि वास्तव में बबली देवी एवं उसके परिवार के साथ प्रकृति ने अन्याय किया है। बबली देवी की स्थिति ने हमें अन्दर तक विचलित कर दिया। जब हम बबली देवी के घर से वापस लौट रहे थे, तो हमने सोचा कि कैसे हम बबली देवी के यहॉ शौचालय निर्माण कराकर उसकी समस्या दूर कर सकते हैं, क्योंकि ग्राम पंचायत हरियावालाखुर्द के निर्मल ग्राम पुरस्कार से सम्मानित ग्राम पंचायत होने के कारण ग्राम पंचायत में व्यक्तिगत शौचालय का लक्ष्य अवशेष नहीं था। ग्राम पंचायत में व्यक्तिगत शौचालय का लक्ष्य न होने के कारण स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के अन्तर्गत बबली देवी के घर पर कार्यक्रम के आई.ई.सी. मद से प्रर्दशन शौचालय बनाने का निर्णय लिया गया, जिसकी स्वीकृति जिला जल एवं स्वच्छता समिति एवं जिला जल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा भी सम्यक विचारोपरान्त

दी गयी। बबली देवी द्वारा शौचालय बनाने हेतु स्वयं भी मजदूरी के रुप में श्रमदान किया गया। समाज सेवक श्री विनोद गोयल, ग्राम प्रधान श्री नैन सिह पंवार तथा क्षेत्र पंचायत सदस्य कु. सीमा वर्मा के द्वारा भी यथा सम्भव बबली देवी की मदद की गयी। सबके सहयोग से बबली देवी ने घर में प्रदर्शन शौचालय के साथ स्नानागार का भी निर्माण किया। कठिन परिस्थितियों में घर में शौचालय निर्माण करने पर माननीय जिला पंचायत अध्यक्ष द्वारा जिला पंचायत की बैठक में प्रदर्शन शौचालय की धनराशी के साथ बबली देवी को सम्मानित किया गया। आज बबली देवी खुश होकर बताती है "स्वजल परियोजना द्वारा मेरी परेशानी दूर की गयी मेरी छोटी बेटी भी अपने भाईयों को घर में शौचालय जाने में मदद करती है। मैं अब निश्चिन्त होकर बाहर काम करने जा सकती हूँ।"

{k= iapk;r lnL; dh Lhek oekZ

NkVh cfgu }kjk Hkkbl dk 'kkpky; ys tkrs gq,

बबली देवी का प्रदर्शन शौचालय बनने पर आज ग्राम पंचायत हरियावाला खुर्द के सभी ग्रामवासियों एवं स्थानीय जनप्रतिनिधियों के मुख से प्रायः यही सुनने में मिल रहा है कि "स्वजल द्वारा बबली देवी के घर प्रदर्शन शौचालय का निर्माण कर स्वच्छता एवं संवेदनशीलता का एक मिसाल कायम की गयी है। जिसे समस्त ग्रामवासी/क्षेत्रवासी सदैव याद रखेंगें।"

Mk- uhye iar] i;kZoj.k fo'ks"kK]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना,
देहरादून

स्वास्थ्य की सजगता का प्रतीकः परवल पेयजल योजना

जनपद देहरादून के विकासखण्ड सहसपुर की ग्राम पंचायत ईस्ट होपटाउन ठाकुरपुर के ग्राम परवल में सैक्टर कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 2013 में परवल पेयजल योजना का निर्माण सामुदायिक सहभागिता के आधार पर किया गया। ग्राम परवल जिला मुख्यालय से 17 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। ग्राम परवल में वर्तमान में 296 मुस्लिम बाहुल्य समुदाय के परिवार निवास करते है। ग्रामवासियों का मुख्य व्यवसाय खेती एवं मजदूरी है।

ijoy i;ty ;kstuk] xke ipk;r& bLVgkiVkmu] ftyk&nsgjknu

ग्राम परवल में पेयजल योजना के निर्माण से पूर्व पेयजल एवं स्वच्छता की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। गाँव के सभी परिवारों के पास निजी उथले हैण्डपम्प थे, जिसका उपयोग वे पीने एवं दैनिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु करते थे। ग्रामवासियों के द्वारा लगाये गये उथले हैण्डपम्प कम गहराई में होने के कारण पानी में गंदलापन हमेशा बना रहता था साथ ही बरसात के समय पानी में कीड़े निकलना एक प्रमुख समस्या थी। पीने के पानी का अन्य विकल्प न होने के कारण ग्रामवासी हैण्डपम्प के पानी पर ही निर्भर थे। ग्रामवासियों द्वारा निरन्तर दूषित पेयजल का उपयोग करने से अधिकतर ग्रामवासी पेट संबंधी बीमारियॉ, पथरी आदि से ग्रसित थे। गॉव में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने हेतु ग्राम प्रधान श्री सुन्दरलाल, उपप्रधान हाजी नौशाद खॉ, ग्रामवासियों एवं जनप्रतिनिधियों के माध्यम से ग्राम परवल में पेयजल योजना निर्माण हेतु मॉग की गयी।

iEi gkÅl vkijVj :e

ग्रामवासियों की मॉग के आधार पर ग्राम परवल में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने हेतु सैक्टर कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 2011–12 में ग्राम परवल के 199 परिवारों के लिये पेयजल योजना का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ। पेयजल योजना निर्माण की कुल लागत `7029940 लाख थी, जिसमें समुदाय की भागीदारी `129600 लाख थी। योजना निर्माण से पूर्व स्वजल एवं सहयोगी संस्था के द्वारा गॉव में गठित पेयजल समिति सदस्यों की क्षमता विकास हेतु विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षणों के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया, जिससे वे ग्राम पंचायत में प्रस्तावित पेयजल योजना का निर्माण, संचालन एवं रखरखाव, भली–भॉति कर सकें। ग्राम पेयजल एवं स्वच्छता

उपसमिति के द्वारा वर्ष 2013 में निर्माण कार्य सामुदायिक सहभागिता एवं पारर्दशिता के साथ सफलतापूर्वक पूर्ण कर ग्रामवासियों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाया गया। सरिता पाल बताती हैं कि ''योजना पूर्ण होने के तुरन्त बाद ही स्वच्छ पेयजल हेतु कनैक्शन ले लिया गया, क्योंकि हैण्डपम्प का पानी पीने से बच्चे बीमार हो रहे थे''।

समुदाय आधारित पेयजल योजना की विशेष उपलब्धि यह रही कि योजना `66.36 लाख में समिति द्वारा पूर्ण कर ली गई, इसमें `3.93 लाख की बचत भी हुई। समिति द्वारा यह बचत सर्वसहमति से पम्प हाऊस ऑपरेटर रूम का कार्य ग्राम पंचायत के स्थानीय ठेकेदार के माध्यम से करवाने के कारण एवं सूझ–बूझ के साथ सामग्री क्रय करने में की गयी। पेयजल योजना के निर्माण के पश्चात् ग्राम पंचायत की स्वच्छता के स्तर पर भी प्रभाव पड़ा। गॉव में योजना निर्माण के समय स्वजल प्रतिनिधियों द्वारा ग्रामवासियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। परिणाम स्वरूप ग्राम पंचायत में शौचालय विहीन परिवारों के द्वारा जागरूक होकर शौचालय का निर्माण किया गया, जिन्हें निर्मल भारत अभियान के अन्तर्गत प्रोत्साहन धनराशि से प्रोत्साहित भी किया गया। वर्तमान में ग्राम परवल के सभी परिवारों के पास शौचालय एवं स्वच्छ पेयजल उपलब्ध है। जाहिरा बेगम खुश होकर बताती है कि ''घर पर ही स्वच्छ पेयजल उपलब्ध होनें से बीमारियॉ कम हुई है। वे बताती है कि गॉव में पानी के आने से स्वच्छता आई है। गॉव में जिन परिवारों के पास पहले शौचालय सुविधा नहीं थी योजना आने के बाद उन्होंने भी शौचालय बना लिये है। आज गॉव में सब परिवारों के पास पानी और शौचालय है।''

LV.M ikLV ij cru /kkrh efgyk

lpkyu ,oa j[kj[kko% पेयजल योजना के संचालन एवं रखरखाव हेतु एकत्रित की गयी धनराशि ऑपरेटर द्वारा समिति के संचालन एवं रखरखाव खाते में जमा की जाती है, जिसका व्यय समिति के द्वारा योजना पर आने वाले व्यय जैसे विद्युत बिल ऑपरेटर एवं फिटर के मानदेय तथा योजना के लीकेज आदि को ठीक करने में किया जाता है। वर्तमान में समिति के संचालन एवं रखरखाव खाते में `1.04 लाख की धनराशि जमा है। ग्रामवासी बताते हैं कि समिति के द्वारा पेयजल योजना का संचालन एवं रखरखाव बेहतर तरीके से किया जा रहा है।

VªUlQeZj ls iEi gkÅl ds fo|qrhdj.k dh 0;oLFkk

गाँव में पेयजल योजना की सफलता का श्रेय ग्राम प्रधान हाजी नौशाद खॉ तत्कालीन ग्राम पंचायत के उपप्रधान तथा योजना के कोषाध्यक्ष को जाता है। इनके द्वारा ग्रामवासियों को स्वच्छ पेयजल के उपयोग एवं दूषित पेयजल के प्रयोग से होने वाली बीमारियों तथा स्वच्छता के प्रति निरन्तर जागरूक किया गया, जिसका परिणाम यह हुआ कि ग्राम पंचायत में स्वजल परियोजना के माध्यम से परवल पेयजल योजना का निर्माण हुआ।

तत्कालीन उपप्रधान एवं उपसमिति के कोषाध्यक्ष हाजी नौशाद खॉ के कुशल नेतृत्व एवं सामुदायिक सहभागिता के साथ काम करने का ही परिणाम है कि वे वर्तमान में ग्राम प्रधान के रूप में ग्राम पंचायत का नेतृत्व कर रहे हैं। ग्राम प्रधान तथा समिति सदस्यों के द्वारा ग्रामवासियों के स्वास्थ्य एवं स्वच्छता का ध्यान रखते हुए पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा के साथ योजना का संचालन एवं रखरखाव किया जा रहा है। निकटवर्ती ग्राम पंचायतों के लिये भी यह एक प्रेरणा स्रोत के रूप में परिलक्षित हो रहा है।

Mk- uhye iqr] i;kZoj.k fo'ks"kK]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना,
देहरादून

सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रतीक पुरोहितवाला

ग्राम पंचायत पुरोहितवाला देहरादून कैन्ट क्षेत्र से 4 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। ग्राम पंचायत में 112 परिवार निवास करते है। कैन्ट क्षेत्र एवं ग्राम पंचायत के उपरी भाग में मिश्रित वन क्षेत्र होने के कारण पंचायत की प्राकृतिक सुन्दरता अपनी ओर आकर्षित करती है। ग्राम पंचायत पुरोहितवाला वर्ष 2009 में ग्राम पंचायत हरियावालाखुर्द से पृथक हुई। श्रीमती मीनू क्षेत्री ग्राम पंचायत पुरोहितवाला की पहली ग्राम प्रधान बनी एवं अपने ग्राम विकास के कार्यों के कारण आज भी ग्राम पंचायत का नेतृत्व कर रही है। ग्राम पंचायत के सभी 112 परिवारों के पास शौचालय सुविधा उपलब्ध है। ग्राम पंचायत में एक आंगनबाड़ी केन्द्र है। आंगनबाड़ी केन्द में बच्चों के लिये शौचालय की सुविधा उपलब्ध है। आंगनबाड़ी केन्द्र भी ग्राम पंचायत की ही तरह बेहद साफ सुथरा है।

ग्राम प्रधान मीनू क्षेत्री ग्राम पंचायत की स्वच्छता हेतु शुरू से ही प्रयासरत रही है। आंगनबाड़ी कार्यकत्री दिव्या सेन बताती है कि ßपूर्व में ग्रामवासी ग्राम पंचायत की स्वच्छता को लेकर जागरूक नहीं थे। ग्रामवासियों के द्वारा सड़क के किनारे झाड़ियों के भीतर या आंगनबाड़ी के पास ही खाली स्थान पर घर से कूड़ा लाकर फेंक दिया जाता था", जिससे बन्दर कुत्ते आदि जानवरों के द्वारा ग्राम पंचायत के रास्तों में फैला दिया जाता थाA इसमें ग्राम पंचायत का वातावरण दूषित होने के साथ साथ आने जाने में भी परेशानी होती थी। ग्राम पंचायत में स्वच्छता बनाये रखने हेतु ग्राम प्रधान द्वारा वार्ड सदस्यों के साथ घर–घर जाकर ग्रामवासियों को जागरूक कर घर से बाहर कूड़ा न फेंकने हेतु जागरूक किया गया। ग्राम प्रधान द्वारा ग्रामवासियों एवं वार्ड सदस्यों के साथ बैठक कर निर्णय लिया गया कि जो भी व्यक्ति ग्राम पंचायत में कूड़ा फेंकते हुए पाया जायेगा उससे दण्ड वसूल किया जायेगा। इस तरह की सूचना उनके द्वारा ग्राम पंचायत के मुख्य स्थानों पर चस्पा कर दी गयी। कूड़ा फेंकने वाले व्यक्ति के पकड़े जाने पर उसे चेतावनी देकर एवं शर्मिदंगी का एहसास कराते हुए छोड़ दिया जाता था। साथ ही वार्ड सदस्यों एवं महिलाओं के द्वारा रोज सुबह ग्राम पंचायत में सफाई अभियान चलाया जाता था। उनके द्वारा लगातार कई दिन तक ग्रामवासियों के द्वारा फेंके गये कूड़े का निस्तारण भी किया गया। यह देखकर धीरे–धीरे ग्रामवासियों के व्यवहार में परिर्वतन हुआ और उन्होंने बाहर कूड़ा फेंकना कम कर दिया। इसी बीच ग्राम प्रधान को स्वजल परियोजना की कार्यशालाओं एवं बैठकों के माध्यम से स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के अन्तर्गत ग्राम पंचायतों में ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबन्धन की जानकारी मिली। उनके द्वारा अपनी ग्राम पंचायत में ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबन्धन कार्य कराने हेतु माँग की गयी। ग्राम पंचायत में शत–प्रतिशत व्यक्तिगत शौचालय आच्छादन एवं स्वच्छता के प्रति ग्रामवासियों की जागरूकता को देखते हुए ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबन्धन का कार्य प्रस्तावित किया गया। अपनी ग्राम पंचायत में ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबन्धन के अन्तर्गत किये जाने वाले प्रस्तावित कार्यो जैसे कूड़ा निस्तारण की व्यवस्था नाली निर्माण वर्मी कम्पोस्टिंग आदि से ग्रामवासी बेहद खुश है, जिसका श्रेय वे अपनी ग्राम प्रधान और ग्राम पंचायत की महिलाओ को देते हैं। वर्ष 2014 में ग्राम पंचायत की निर्वाचित 06 ग्राम पंचायत सदस्यों में सभी 06 महिलाऐं है। ग्राम प्रधान श्रीमती मीनू क्षेत्री कहती है कि "ग्रामवासियों ने मेरी ग्राम पंचायत को स्वच्छ रखने में बहुत सहयोग किया। ग्रामवासियों के सहयोग से ग्राम पंचायत में स्वजल परियोजना द्वारा ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबन्धन का कार्य कराया जा रहा है। ग्राम पंचायत में ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबन्धन के कार्य के पश्चात ग्राम पंचायत पुरोहितवाला सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रतीक होगी"।

Mk- uhye iir] i;koj.k fo'k"kK]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना, देहरादून

स्वच्छता की ओर अग्रसर

"जब से सामुदायिक स्वच्छता शौचालय बना है तब से हमारी परेशानी दूर हो गयी ये शब्द है पीठ बाजार रामपुर भाऊवाला में दुकान लगाने वाले गुलशेर एवं अन्य व्यापारियों के"। पिछले कई वर्षों से ग्राम पंचायत के पीठ बाजार में दुकान लगा रहा हूँ। कभी–कभी मदद के लिये साथ में बीबी–बच्चों को भी लाना पड़ जाता था पीठ बाजार में शौचालय सुविधा न होने से बड़ी परेशानी होती थी पर अब सब ठीक है। ग्राम प्रधान द्वारा बड़ा अच्छा काम किया गया है पीठ बाजार के सभी व्यापारियों की परेशानी समाप्त हो गयी है।

ग्राम पंचायत रामपुर भाऊवाला में स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के अन्तर्गत निर्मित सामुदायिक स्वच्छता कॉम्पलेक्स स्वच्छता ग्राम पंचायत रामपुर भाऊवाला एवं निकटवर्ती ग्राम पंचायतों के लिये आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। देहरादून जनपद के विकासखण्ड सहसपुर की ग्राम पंचायत रामपुर भाऊवाला मुख्य शहर से 21 कि.मी. की दूरी पर है। ग्राम पंचायत की प्रमुख समस्या है ग्राम पंचायत रामपुर भाऊवाला में अवस्थित 335 दुकानों के व्यापारियों तथा पीठ बाजार के व्यापारियों के लिये सामुदायिक स्वच्छता शौचालय की व्यवस्था का न होना। ग्राम पंचायत रामपुर भाऊवाला में प्रत्येक बृहस्पतिवार को पीठ बाजार लगता है, जिसमें बाहर से व्यापारी आकर विभिन्न प्रकार के समान बेचते है। रामपुर भाऊवाला के न्याय पंचायत तथा बड़ा बाजार होने के कारण आस–पास की 12 ग्राम पंचायतों से ग्रामवासियों का प्रत्येक दिन आवागमन बना रहता है। ग्राम पंचायत सामुदायिक स्वच्छता शौचालय सुविधा उपलब्ध न होने के कारण व्यापारियों तथा यात्रियों के द्वारा खुले में ही शौच आदि किया जाता है, जिससे ग्राम पंचायत का वातावरण दूषित होता है।

ग्राम प्रधान श्री प्रवीण कुमार ने वर्ष 2014 में ग्राम पंचायत के प्रधान पद के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। प्रधान पद पर आसीन होते ही ग्राम पंचायत एवं रामपुर भाऊवाला मुख्य बाजार की स्वच्छता को अपना लक्ष्य रख प्राथमिकता पर कार्य किया। ग्राम प्रधान ने वार्ड सदस्यों के साथ मिलकर ग्राम पंचायत में लगने वाले पीठ बाजार के व्यापारियों रामपुर भाऊवाला के दुकानदारों तथा ग्राम पंचायत में बाहर से आने वाले यात्रियों के लिये सामुदायिक स्वच्छता कॉम्पलेक्स के निर्माण हेतु प्रस्ताव पारित किया। ग्राम प्रधान द्वारा स्वजल कार्यालय में समस्या को अवगत कराते हुये प्रस्ताव जमा कराया गया। ग्राम पंचायत की समस्या को देखते हुए ग्राम पंचायत में सामुदायिक स्वच्छता कॉम्पलेक्स का निर्माण कार्य प्रस्तावित किया गया। ग्राम पंचायत में सामुदायिक स्वच्छता कॉम्पलेक्स के निर्माण हेतु रामपुर भाऊवाला के व्यापारियों के द्वारा `20000 अशंदान निर्माण हेतु जमा कराया गया। ग्राम प्रधान तथा समिति सदस्यों के द्वारा सामुदायिक स्वच्छता कॉम्पलेक्स कार्य गुणवत्ता के साथ कार्य पूर्ण कर उपयोग हेतु प्रारम्भ किया गया है। ग्राम प्रधान तथा समिति सदस्यों के द्वारा सामुदायिक स्वच्छता कॉम्पलेक्स के रखरखाव हेतु व्यापार मंडल दल रामपुर भाऊवाला के व्यापारियों के साथ स्वच्छता नियमावली तय की

गयी। सामुदायिक स्वच्छता कॉम्पलेक्स की सफाई हेतु दो सफाई कर्मचारियों की नियुक्ति मासिक मानदेय पर की गयी है। पीठ बाजार तथा रामपुर भाऊवाला के व्यापारियों के साथ–साथ ग्राम पंचायत में आने वाले यात्रियों के उपयोग हेतु `5 शुल्क सर्वसहमति से समिति द्वारा तय किया गया है। ग्राम प्रधान के द्वारा ग्राम पंचायत एवं ग्राम पंचायत रामपुर भाऊवाला के बाजार की स्वच्छता हेतु कार्य किया जा रहा है। ग्राम पंचायत रामपुर भाऊवाला की दुकानों से प्रतिदिन निकलने वाले कूड़े का निस्तारण तथा बाजार एवं ग्राम पंचायत की सफाई हेतु भी ग्राम प्रधान के द्वारा सफाई कर्मचारी नियुक्त किये गये हैं। सफाई कर्मचारियों के द्वारा प्रतिदिन बाजार से कूड़ा इकट्ठा कर ग्राम पंचायत से दूर उचित निस्तारण किया जाता है। रामपुर भाऊवाला बाजार की सफाई व्यवस्था बनायें रखने हेतु स्वच्छता नियमावली के अनुसार प्रति माह `50 से 100 तक प्रत्येक व्यापारी के द्वारा दिया जाता है। प्रति माह लगभग `17000 की धनराशि ग्राम पंचायत में स्वच्छता बनाये रखने के लिये एकत्र की जाती है।

"भाऊवाला चौक के व्यापारी श्री विराज मेहता एवं राम अवतार गर्ग ग्राम प्रधान प्रवीण की प्रशंसा करते हुए कहते है कि बहुत कम समय में प्रधान ने रामपुर भाऊवाला चौक की तस्वीर बदल दी पहले दुकानों और चौक के पास कूड़े के ढेर लगे रहते थे, पर अब रोज सफाई होती है चौक साफ–सुथरा रहता है"

ग्राम प्रधान रामपुर भाऊवाला के युवा कुशल नेतृत्व में की गयी मेहनत एवं स्वच्छता के प्रति उनका जुनून ग्राम पंचायत की स्वच्छता के रूप में दृष्टिगत होता है। ग्राम प्रधान के अनुसार जब हर कदम स्वच्छता की ओर बढ़ेगा तभी स्वच्छ भारत का सपना साकार होगा। इसी सपने को साकार करने हेतु उनके द्वारा समय–समय पर ग्राम पंचायत के बच्चों में स्वच्छता संबंधी प्रतियोगिता एवं स्वच्छता संबंधी गतिविधियाँ करवाकर प्रोत्साहित किया जाता है। स्वच्छता की ओर अग्रसर ग्राम पंचायत रामपुर भाऊवाला भविष्य में निकटवर्ती ग्राम पंचायतों के लिये एक उत्प्रेरक का कार्य करेगी।

Mk- uhye iir] i;koj.k fo'k"kK]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना,
देहरादून

चीसूपानी पेयजल योजना सफल प्रबन्धन की एक अनूठी पहल

आपदा से सम्बन्धित अभिलेखीकरण के प्रशिक्षण के दौरान मुझे जनपद देहरादून के विकासखण्ड, डोईवाला के ग्राम पंचायत दुधली के भ्रमण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दुधली ग्राम पंचायत राजाजी नेशनल पार्क की गोद में बसा हुआ है जो जिला मुख्यालय से 16 कि.मी. की दूरी पर स्थित है, ग्राम पंचायत के मध्य सुसवा नदी बहती है। यह जोकि जनपद देहरादून के विकासखण्ड डोईवाला में स्थित है। ग्राम पंचायत में कुल 548 परिवार निवास करते है, जिनकी जनसंख्या 2050 है। यहॉ पर 10 तोक हैं, जिसमें चिसूपानी तोक में कुल 134 परिवार हैं। ग्रामवासियों की आय का मुख्य साधन कृषि एवं मजदूरी है। समुदाय में विभिन्न स्थानों से बसे कुॅमाऊनी, गढ़वाली, गोरखा वर्ग के लोग निवास करते हैं।

cBd e fopkj&foe'k djrh efgyk;

यहॉ पर पूर्व में पेयजल की गम्भीर समस्या थी पेयजल की लाईन एवं व्यवस्था ठीक नहीं होने से लोग पहाड़ी से निकलने वाले एकमात्र दुधिया स्रोत पर निर्भर थे, जिसमें वर्षा–ऋतु में गन्दा, मटमैला पानी पीने को ग्रामवासियों मजूबर होना पड़ता था। इस कारण ग्रामवासी अधिकतर पीलिया, अतिसार, मियादी बुखार, त्वचा के रोग आदि से पीड़ित थे। धीरे–धीरे ग्राम पंचायत में विकास कार्यक्रमों के तहत सरकारी हैण्ड पम्प लगाये गये, जिसमें मटमैला पानी आने से उनका उपयोग नहीं हुआ। इसी दौरान ग्राम के कुछ परिवारों द्वारा व्यक्तिगत हैण्ड पम्प लगाये गये, जिनका उपयोग हुआ, किन्तु धीरे–धीरे वह भी सूखने लगे। इस प्रकार ग्रामवासियों के सम्मुख पेयजल का गम्भीर संकट पैदा हो गया।

वर्ष 2011–12 में ग्रामवासियों की मॉग के अनुसार चीसूपानी तोक को सैक्टर कार्यक्रम के अन्तर्गत पम्पिंग पेयजल योजना हेतु चयनित किया गया। आरम्भिक चरण में आपसी विश्वास नहीं होने से बैठकों में समुदाय की भागीदारी न्यूनतम रही, जिसमें महिलाओं की भागीदारी नहीं के बराबर थी, किन्तु लगातार सहयोगी संस्था–समाज सेवा संस्था के सहयोग से बैठकों में समुदाय की भागीदारी बढ़ी। धीरे–धीरे आपसी विश्वास बढ़ा व एक साथ बैठ कर लोगों द्वारा अपनी पेयजल योजना का खाका तैयार किया गया, तदुपरान्त जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई

vkoj gM Vd phlikuh] ngjknu

देहरादून के तकनीकी मार्गदर्शन में वर्ष 2014 में चीसूपानी पम्पिंग पेयजल योजना उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति द्वारा पूर्ण की गयी। पम्पिंग पेयजल योजना के तहत यहाँ 40000 ली. क्षमता का ओवरहैड टैंक है, जिससे उपभोक्ता परिवारों को प्रातः 2 घण्टे 7.00 बजे से 9.00 तक तथा सांय एक घण्टे 6.00 से 7.00 बजे तक पेयजल आपूर्ति की जाती है तथा नियमित रूप से क्लोरीनेशन किया जाता है।

चीसूपानी के श्री कमल थापा बताते हैं कि पेयजल व्यवस्था हेतु गांववालों की सहमति से नियमावली बनायी गयी है, जिसमें नियमित बैठकों का आयोजन संचालन एवं रखरखाव धनराशि जमा करना, शादी, नामकरण आदि शुभ अवसरों पर पानी की खपत अधिक होने पर उपभोक्ता परिवार द्वारा तय धनराशि से दोगुनी धनराशि जमा करना आदि शामिल है, जिसका अनुपालन किया जा रहा है। भविष्य में परिवारों के बढ़ने की स्थिति में वितरण व्यवस्था को संशोधित किया जायेगा। उपभोक्ता परिवार प्रत्येक माह की बैठक में `100.00 रखरखाव शुल्क जमा करते हैं, जिसमें योजना रखरखाव कार्यकर्ता श्री जीवन कुमार को मानदेय स्वरूप `1000.00 चैक के माध्यम से दिया जाता है। कोषाध्यक्ष श्री अरूण क्षेत्री द्वारा बताया गया कि संचालन एवं रखरखाव खाते में `58000.00 जमा हैं।

उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति की सदस्या मोना राणा कहती हैं कि पहले शौचालय नहीं होनें से दिक्कतों का सामना करना पड़ता था, किन्तु अब शौचालय बनने से गॉव के रास्ते साफ दिखायी देते हैं तथा लोग पहले की तरह बीमार नहीं पड़ते है। ''ऑगनवाड़ी कार्यकर्त्री सुशीला राय कहती है कि पहले हर समय पानी की चिन्ता लगी रहती थी, किन्तु अब समय पर एवं नजदीक पानी आने से महिलाओं को सुविधा प्राप्त हुई है और समय की भी बचत हो रही है। ग्राम प्रधान हीरा थापा विचार व्यक्त कर कहती हैं साफ पेयजल व्यवस्था होने से हमारा गॉव खुश है।'' इस प्रकार उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति–चीसूपानी द्वारा अपनी पेयजल योजना का सफल प्रबन्धन कर अन्य ग्राम पंचायतों हेतु उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

y{eh dekjh] lkenkf;d fodkl fo'kK
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना,
नैनीताल

सिसल्डी हुआ गंदगी से मुक्त

Lkenkf;d 'kkpky;] xke fllYMh] dkV}kj&fj[k.kh[kky] ftyk&ikMh

कभी–कभी कुछ गांव के लोग व्यवहार परिवर्तन करने पर कुछ ऐसा कार्य कर जाते है कि दूसरे लोगों के लिए वे और उनके कार्य प्रेरणा बन जाते हैं, ऐसा ही एक गांव है सिसल्डी। यह गांव कोटद्वार रिखणीखाल मोटर मार्ग पर 56 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित है। यह जिला मुख्यालय से 105 कि.मी. व ब्लॉक मुख्यालय से 23 कि.मी. दूरी पर है। इसी ग्राम से जुड़ा है एक छोटा सा बाजार सिसल्डी। यूँ तो कई बार हम इस बाजार से गुजरते थे, लेकिन जगह–जगह फैली गंदगी व मानव मल के कारण यहॉ रूकने का मन नहीं होता था। पहली बार वर्ष 2011–12 में समुदाय की मांग पर ग्राम पंचायत सिसल्डी से पेयजल का प्रस्ताव आया, तो बैठकों का दौर शुरू हुआ। स्वजल टीम द्वारा भी इस ग्राम व बाजार को गंदगी से मुक्त करने की ठान ली। यह गांव, बाजार व आस–पास के अन्य ग्रामों से जुड़ा होने के कारण कई गांवों का स्टेशन था। अन्य गांवों के लोग यहॉ बस से उतरते–चढ़ते थे। सामुदायिक शौचालय न होने के कारण यात्री खुले में शौच करने को विवश थे। बाजार की अपनी गन्दगी तो पहले से ही समस्या बनी हुई थी। कई बैठकों के बाद भी समस्या का समाधान न होने पर एक–एक व्यापारी, गांववासी व विद्यालय के बच्चों से बातचीत की गयी, उन्हें दूषित जल, गन्दगी व खुले में शौच से होने वाली बीमारियों के बारे जानकारी दी गयी। साथ ही व्यक्तिगत शौचालय, सामुदायिक शौचालय व ठोस तरल अपशिष्ट प्रबन्धन पर जानकारी दी गयी, तो स्वयं ग्रामवासी व व्यापारी अपने गॉव व बाजार को गंदगी से मुक्त करने का खाका तैयार करने

LV.M ikLV dh tkudkjh nrs QhYM deh] xke fllYMh] dkV}kj&fj[k.kh[kky] ftyk&ikMh

लगे। इसके अन्तर्गत उनके द्वारा बाजार के किनारे सामुदायिक शौचालय व बाजार के दोनों छोरों पर कूड़ेदान बेचे जा सकने वाले कूड़े की अलग व्यवस्था, व्यक्तिगत शौचालय व स्वच्छ पेयजल व रखरखाव हेतु प्रण लिया व लग गये कार्य में।

सामुदायिक शौचालय हेतु नियमानुसार अंशदान, सफाई की जिम्मेदारी लेते हुए स्वजल के सहयोग से सामुदायिक शौचालय का निर्माण कार्य पूर्ण किया गया। वर्तमान में सामुदायिक शौचालय में पानी की समुचित व्यवस्था है व यात्रियों व व्यापारियों द्वारा उपयोग किया जा रहा है। उपभोक्ता पेयजल व स्वच्छता उपसमिति द्वारा पेयजल व सामुदायिक शौचालय का रखरखाव किया जा रहा है।

स्वजल के प्रयास से वर्तमान में सिसल्डी बाजार व गांव गंदगी से मुक्त व पर्यावरणीय रूप से स्वच्छ गांव बन गया है। आज अन्य ग्रामों के लोग वहां रूकते हैं, बैठते हैं व इसकी मिशाल देते हैं।

fot; iidk'k xjkyk] rduhdh lykgdkj]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना,
पौड़ी गढ़वाल

समुदायः संचालन एक प्रयास

xke ipk;r&ukjk;.kiqj efy;k esa fufeZr
Dykjhu'ku d{k] ftyk&uSuhrky

ग्राम पंचायत नारायणपुर मूलिया जनपद नैनीताल के विकासखण्ड रामनगर में स्थित है। ग्राम पंचायत रामनगर शहर से 10 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। ग्राम पंचायत में तीन राजस्व ग्राम, नारायणपुर मूलिया, देवीपुर मूलिया और रूपपुर है, इन तीनों ग्रामों की जनसंख्या 1821 है, जिसमें 63 अनुसूचित जाति. एवं 220 सामान्य जाति के है। ग्राम पंचायत में एक पंचायत घर, एक प्राथमिक विद्यालय, एक राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, एक दुग्ध डेरी, 3 आँगनबाड़ी केन्द्र एवं एक पशु चिकित्सालय है।

ग्राम पंचायत नारायणपुर मूलिया के अन्तर्गत ग्राम देवीपुर मूलिया में पिछले 40 वर्षों से पीने के शुद्ध पानी की समस्या चली आ रही थी। उत्तराखण्ड जल निगम एवं उत्तराखण्ड जल संस्थान के द्वारा अनेकों बार नई–नई पाईप लाईनें डालकर उक्त गॉव को पेयजल उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया, किन्तु समस्या का निराकरण नहीं हो सका। इसी प्रकार ग्राम नारायणपुर मूलिया में भी पीने के पानी हेतु स्थानीय लोग दूर–दूर से पीने का पानी लाते थे।

राजीव गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल मिशन–2003 के अन्तर्गत ग्राम पंचायत के तोक देवीपुर एवं नारायणपुर मुलिया की प्रास्थिति आच्छादित न होने तथा आंशिक आच्छादित में होने के कारण पंचायत द्वारा पेयजल योजना हेतु आवेदन किया गया जिसके उपरान्त स्वजल परियोजना–भीमताल द्वारा समस्त औपचारिकताएं पूर्ण कर अग्रिम कार्यवाही की गयी। ग्राम पंचायत नारायणपुर मूलिया के अन्तर्गत उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति देवीपुर मूलिया के द्वारा परियोजना प्रबन्धक जिला परियोजना प्रबन्धक इकाई स्वजल परियोजना– भीमताल से ग्राम देवीपुर मूलिया में पेयजल योजना के निर्माण हेतु अनुबन्ध किया गया।

xke ipk;r esa fufeZr vkoj gsM VSad

योजना को ग्राम नारायणपुर मूलिया में पंचायत घर के पास प्राथमिक विद्यालय की भूमि में

;-MCY;-, l-, l-lh- nohij efy;k fo-[k jkeuxj dk v)okf"kd ty eY; n;d ii=

लगाने का प्रस्ताव रखा गया था, किन्तु क्षेत्रीय जनता के आपसी मतभेदों एवं द्वेष भावनाओं के कारण योजना को पंचायत घर के पास न बनाये जाने का विरोध होने लगा। जन भावनाओं को देखते हुए ग्राम पंचायत द्वारा एक आपातकालीन बैठक बुलाई गई इस बैठक में ग्राम देवीपुर मूलिया में उमेद सिंह पुत्र श्री कोतवाल सिंह द्वारा पेयजल योजना को अपनी निजी भूमि में लगाये जाने की सहमति दी गयी। उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति देवीपुर मूलिया द्वारा ग्राम देवीपुर मूलिया में पेयजल योजना के निर्माण हेतु समाचार पत्रों के माध्यम से निविदायें आमंत्रित कराकर योजना का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया गया। निर्माण कार्य के दौरान कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा स्थानीय जनता में एक भ्रामक प्रचार–प्रसार किया गया कि उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति द्वारा बनाई जा रही योजना फेल हो जायेगी, इनसे जल संयोजन नहीं लो। इसके अतिरिक्त नहरों, गूलों एवं लोक निर्माण विभाग की पुलियों में पाईप क्रासिंग किस प्रकार से की जाये। इस समस्या के समाधान हेतु समिति द्वारा समय–समय पर बैठकें कराकर एवं स्थानीय जनता के सुझावों के अनुरूप संवेदनशील स्थलों में लोहे के पाईप डाले गये। पाईप लाईन खोदते समय कुछ अज्ञानी लोगों द्वारा अपने खेतों में पाईप लाईन न डालने का विरोध किया गया उन्हें समझाकर उनकी अज्ञानता को दूर किया गया। समिति द्वारा 40 किलो लीटर क्षमता के अपर जलाशय से पानी के वितरण हेतु 2 प्रणाली अलग–अलग तोकों हेतु बनाई गयी, जिसमें ग्राम देवीपुर की वितरण प्रणाली में 41 जल संयोजन एवं ग्राम नारायणपुर मूलिया प्रणाली में 108 जल संयोजन समिति द्वारा दिये गये। वर्तमान में समिति द्वारा ग्रामसभा में कुल 164 जल संयोजन दिये गये हैं जिसका प्रति संयोजन शुल्क `600.00 से बढ़ाकर `2000.00 कर दिया गया है।

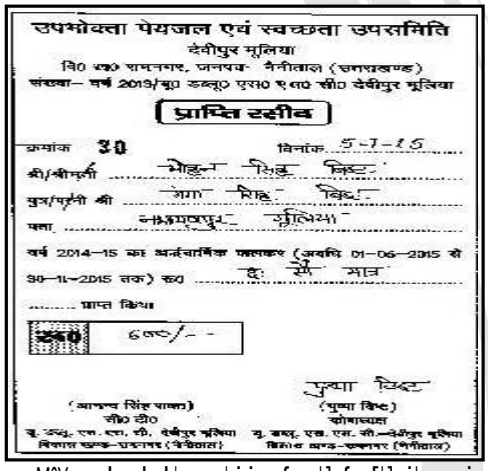

;-MCY;-, l-, l-lh- nohij efy;k fo-[k jkeuxj dk v)okf"kd ty eY; n;d ii=

जल संयोजन लेने हेतु समिति द्वारा जल संयोजन स्वीकृति हेतु फार्म छपवाये गये, जिसमें अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर होने के उपरान्त ही जल संयोजन का पंजीकरण करने के उपरान्त ही स्वीकृति प्रदान की जाती है। समिति द्वारा अपनी बैठक में यह भी निर्देश निकाले गये कि यदि किसी व्यक्ति द्वारा बिना जल संयोजन स्वीकृत कराये बिना ही जल संयोजन ले लिया है तो उस व्यक्ति से `500.00 का दण्डात्मक शुल्क वसूला जायेगा। समिति द्वारा वर्ष 2011

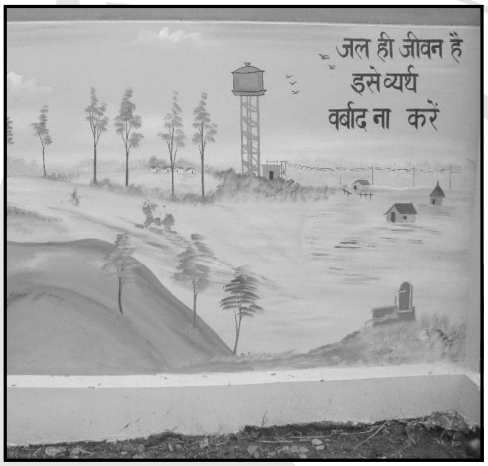

nhokj y[ku

से जलकर की वसूली प्रति परिवार `100.00 प्रतिमाह की जा रही। जलकर कुछ व्यक्तियों द्वारा समय–समय पर जमा नहीं किया जाता है, ऐसे व्यक्तियों की सूची तैयार कर ग्राम पंचायत के सार्वजनिक स्थल पर लगाया जाता है और तब तक लगाया जाता है जब तक वह व्यक्ति जलकर जमा न कर दें, जिससे लोक लाज के डर से वह व्यक्ति जलकर की धनराशि 10 प्रतिशत ब्याज सहित जमा करता है। समिति द्वारा जलकर की वसूली फसलवार की जाती है, क्योंकि कुछ व्यक्ति मासिक या त्रैमासिक जलकर जमा नहीं कर सकते हैं। उपभोक्ताओं की सुविधानुसार वर्ष में दो बार 1 जून से 30 नवम्बर तक एवं 1 दिसम्बर से 31 मई तक जलकर लिया जाता है। जलकर लेने हेतु समिति द्वारा बिल बुक छपवाई गई है, जब उपभोक्ता बिल लेकर कोषाध्यक्ष के पास जाता है, तो कोषाध्यक्ष द्वारा बिल की धनराशि जमा किये जाने की पक्की रसीद उपभोक्ता को दी जाती है। उपभोक्ताओं की समस्या के निराकरण हेतु बिल में सामुदायिक तकनीकी व्यक्ति का मोबाइल नम्बर एवं अन्य दिशा–निर्देश भी समय–समय पर समिति द्वारा छपवाये जाते है। समिति के रख–रखाव खाते में जुलाई 2015 तक `77532.00 की धनराशि जमा है। उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति द्वारा समय–समय पर गूलों एवं नालों की साफ–सफाई व कीटनाशक का छिड़काव भी कराया जाता है।

जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई स्वजल परियोजना, भीमताल द्वारा ग्राम पंचायत में शौचालय विहीन परिवारों को चिन्हित कर 49 परिवारों को शौचालय प्रोत्साहन धनराशि, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में शौचालयों का निर्माण, अनुसूचित जाति, जनजाति बस्ती एवं विद्यालयों में कूड़ेदानों का निर्माण कार्य किये जाने हेतु सम्पूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम के अन्तर्गत धनराशि उपलब्ध करवाकर ग्राम पंचायत नारायणपुर मूलिया को वर्ष 2011 में निर्मल ग्राम पुरस्कार, भारत की महामहिम "राष्ट्रपति" द्वारा प्रदान किया गया।

वर्ष 2014–15 में ग्राम पंचायत में स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबन्धन का कार्य भी किया जा रहा है, जिसमें 39 खाद गड्ढे, 5 सामुहिक कूड़ादान, 277 मीटर नाली व 7 बायोगैस संयत्र का निर्माण कार्य किया जा रहा है। ग्राम देवीपुर मूलिया की पेयजल योजना का निरीक्षण तत्कालीन निदेशक स्वजल परियोजना, देहरादून, विश्व बैंक प्रतिनिधि डा. एस. सतीश द्वारा भी किया जा चुका है।

ग्राम पंचायत नारायणपुर मूलिया के अन्तर्गत उपभोक्ता इस पेयजल योजना का लाभ वैवाहिक, नामकरण, संस्कार इत्यादि शुभ अवसरों पर भी ले रहे हैं। इस योजना से ग्राम पंचायत की जनता बहुत खुश है।

geUr frokjh] lkeqnkf;d fodkl fo'ks"kK]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना,
भीमताल

स्वच्छता के बढ़ते कदम

जनपद नैनीताल के विकासशील विकासखण्ड बेतालघाट के अन्तर्गत एक ग्राम पंचायत खैरनी स्थित है। छोटी सी ग्राम पंचायत खैरनी, बेतालघाट मार्ग पर खैरना से 8 कि.मी. की दूरी पर प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर है। ग्राम पंचायत के एक ओर ऊँची–ऊँची पहाड़ियाँ हैं, तो दूसरी ओर कोसी नदी बह रही है। ग्राम पंचायत में कुल 37 सामान्य जाति के परिवार निवास करते हैं तथा गांव की कुल जनसंख्या 195 है। ग्राम पंचायत धारी एवं खैरनी के मध्य एक प्राथमिक पाठशाला है।

'kkpky; d lkFk ykHkkFkh] xke ipk;r&[kjuh] crky?kkV

ग्राम पंचायत में स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम के अन्तर्गत बैठकों एवं अर्न्तवैयक्तिक सम्पर्कों द्वारा स्वच्छता, स्वास्थ्य, एवं स्वच्छता में आन्तरिक संबंध को बताया गया। इसके अतिरिक्त समुदाय में पेयजल का रखरखाव एवं शौचालय के महत्व के विषय में भी बार–बार जानकारी दी गयी। शौचालय के महत्व को बताते हुए शौचालय बनाने हेतु प्रेरित किया गया, जिसके फलस्वरूप ग्राम पंचायत के स्वच्छता स्तर में सुधार आया तथा 99 प्रतिशत शौचालयों का निर्माण करवाया गया।

dEikLV fiV] xke ipk;r&crky?kkV

पेयजल के रखरखाव के महत्व को ध्यान में रखते हुए स्वच्छ पेयजल के अभाव में होने वाली बीमारियों एवं उनसे बचाव के उपायों पर भी प्रकाश डाला गया, जिसके फलस्वरूप ग्राम पंचायत के स्वच्छता स्तर में और निखार आया। परिणामस्वरूप स्वच्छ पेयजल के अभाव में जल जनित रोगों में न्यूनता दिखाई देती है। दस्त, पेचिश, बुखार आदि रोगों की सम्भावना कम हो गयी है।

स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम के अन्तर्गत समुदाय के लोगों के व्यवहार में इतना परिवर्तन आया कि ग्राम पंचायत ने ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबन्धन हेतु मांग रखी। ग्राम पंचायत के चयन के पश्चात् क्रियान्वयन हेतु त्रिपक्षीय अनुबन्ध किया गया। वर्तमान में ग्राम पंचायत में ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबन्धन के अन्तर्गत 02 कूड़ा गड्ढे, 34 कम्पोस्ट पिट एवं नालियों का निर्माण करवाया जा रहा है जो कि पूर्णता की ओर हैं।

ग्राम पंचायत के अन्तर्गत किये गये कार्यों, बैठकों, अन्तरवैयक्तिक सम्पर्कों आदि में पूर्व एवं वर्तमान ग्राम पंचायत अध्यक्षों द्वारा पूर्ण सहयोग किया जा रहा है।

'kkpky; d lkFk ykHkkFkh]
xke ipk;r&[kjuh] crky?kkV

Jherh uhrk 'kek] LokLF; ,o LoPNrk fo'k"kK]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना,
भीमताल

खुले में शौच से मुक्ति की ओर अग्रसर–ग्राम तुशराड़

जनपद नैनीताल के सुदूरवर्ती विकासखण्ड ओखलकाण्डा में स्थित ग्राम पंचायत तुशराड़ है जिसकी भौगोलिक परिस्थिति अपने आप में नैसर्गिक सुन्दरता लिए हुए है। एक तरफ ऊँची–ऊँची पहाड़ियॉ हैं तो दूसरी ओर कल–कल करती अविरल बहती गौला नदी स्थित है। ग्राम पंचायत की एक विशेषता यह भी है कि विकासखण्ड ओखलकाण्डा के कुल 6 न्याय पंचायतों में से एक न्याय पंचायत तुशराड़ भी है, जिसके अन्तर्गत कुल 13 ग्राम पंचायतें हैं।

'kkp d lkFk ok'k c'ku]
xke iapk;r&rq'kjkM] Hkherky

वर्तमान में ग्राम पंचायत में कुल 137 परिवार निवास करते हैं, जिसमें 57 परिवार गरीबी रेखा से नीचे तथा 80 परिवार गरीबी रेखा से ऊपर जीवनयापन करते हैं। ग्राम पंचायत में स्कूल व आंगनबाड़ी के अतिरिक्त 6 सरकारी भवन निर्मित है जिनमें स्वच्छता के सारे मानक पूर्ण हैं। ग्राम पंचायत को एक उपलब्धि और हासिल है कि वर्ष 2006–07 में सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत निर्मल ग्राम पुरस्कार सम्मान भी प्राप्त हो चुका है किन्तु वर्ष 2012 के आधारभूत सर्वे में ग्राम पंचायत में कुल 137 परिवारों में से 80 परिवारों के पास अपना व्यक्तिगत शौचालय नहीं पाया गया जो अपने आप में चौकाने वाला लक्ष्य लगने लगा, किन्तु विगत वर्षों में लगने वाले शिविरों व बैठकों में बार–बार शौचालय हेतु प्रोत्साहन धनराशि की मांग की जाती रही है तथा सर्वे न होने की दशा में निर्मल ग्राम पुरस्कार के अन्तर्गत ग्राम में प्रोत्साहन धनराशि दिया जाना सम्भव नहीं हो पाया। तत्पश्चात् वर्ष 2013 में आधारभूत सर्वेक्षण के आंकड़े आये और 2014 में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव सम्पन्न होने के उपरान्त नव निर्वाचित ग्राम प्रधान श्री जितेन्द्र जोशी से चर्चा हुयी कि किस प्रकार ग्राम पंचायत को खुले में शौच की प्रथा से मुक्त किया जाय। ग्राम प्रधान द्वारा ग्रामीणों से वार्ता की गयी, जिसमें स्वच्छ भारत मिशन के मानक बताये गये। एक और बात का जिक्र आवश्यक है कि ग्राम पंचायत के परिवारों द्वारा अपनी आर्थिक स्थिति को कृषि, पशुपालन व नौकरी के द्वारा मजबूत किया जा चुका है। ग्रामीणों के पास प्रोत्साहन धनराशि प्राप्ति हेतु आवेदन पत्र प्राप्त हुए तो आश्चर्य हुआ कि 32 फार्म प्राप्त हुए थे और सभी पानी व वॉश–बेसिन आदि से सुसज्जित पाये गये, जानकारी लेने पर ज्ञात हुआ कि ijh ipk;r }kjk ifjokj fpfUgr djd gY}kuh d fdlh dkjhxj dk Bdk n fn;k x;k vkj lc dk; ,d lkFk i.k gk x;k tcfd ekVj jkM l xko dh iny nqjh 5 fd-eh- gA mld ckn Hkh gkly dk lyke g fd ykxk d fu'p; d vkx lc dfBukbi ckuh utj vku yxhA bl l irhr gkrk g fd r'kjkM viu blh i;klk l ,d fnu vo'; [ky e 'kkp l efDr dh vkj lQyrk ikIr gkxhA

अंत में इसी प्रकार न्याय पंचायत मुख्यालय की तरह अन्य ग्राम पंचायतों को भी यही प्रयास करना होगा।

pUnkUre.kh f=ikBh] lkenkf;d fodkl fo'k"kK
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना, भीमताल

पम्पिंग पेयजल योजना हिम्मतपुर मल्ला एक सफल प्रबन्धन

उत्तराखण्ड राज्य के जनपद नैनीताल की ग्राम पंचायत हिम्मतपुर मल्ला, विकासखण्ड हल्द्वानी, स्वजल मुख्यालय, भीमताल से 38 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहॉ पर कुल परिवार 523 निवास करते हैं तथा यहॉ की कुल जनसंख्या 2542 है। ग्रामवासियों की आजीविका का मुख्य साधन नौकरी, व्यवसाय व कृषि है। हिम्मतपुर मल्ला में पेयजल की गम्भीर समस्या थी। गर्मियों में अधिकांश परिवार पानी का टैंकर मंगाकर पेयजल आपूर्ति करते थे। एक पानी के टैंकर का मूल्य `500.00 भुगतान करना होता था। इस प्रकार एक परिवार का वर्ष में लगभग `60000.00 पानी के क्रय में व्यय हो रहा था। पेयजल उपयोग हेतु ग्रामीण इस पानी को छानकर पी रहे थे, उसके बाद भी लोग पीलिया, अतिसार आदि से पीड़ित रहते थे।

lpkyu ,o j[kj[kko cBd]
fgEerij eYyk] ftyk&uhrky

ग्रामीणों की समस्या के मद्देनजर व उनकी मांग के अनुरुप हिम्मतपुर मल्ला को सैक्टर कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 2010 में चयनित किया गया। आरम्भिक चरण में समुदाय को समझाने में परेशानी हुई, क्योंकि उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति पम्पिंग पेयजल का कार्य कर पायेगी? यह अपने आप में बड़ा प्रश्नचिन्ह था, किन्तु समुदाय से बार–बार अन्तरवैयक्तिक सम्पर्क व खुली बैठकों का आयोजन कर कार्यक्रम की जानकारी दी गयी तथा उपभोक्ता परिवारों को अंशदान, श्रमदान तथा संचालन एवं रखरखाव धनराशि जमा करने हेतु प्रेरित किया गया, जिसके फलस्वरुप उपभोक्ता परिवारों द्वारा अंशदान के रूप में `59790.00 व श्रमदान `240810.00 उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति के पूँजीगत खाते में जमा किया गया। पूर्व ग्राम प्रधान त्रिभुवन जोशी, कोषाध्यक्ष आनन्द दुर्गापाल व जिला पंचायत अध्यक्ष कमलेश शर्मा के अथक प्रयासों, सहयोगी संस्था द्वाराहाट ग्राम स्वराज्य मण्डल के लगातार सम्पर्क व जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई नैनीताल, स्वजल के मार्गदर्शन में वर्ष 2012 में हिम्मतपुर पेयजल योजना का कार्य पूर्ण किया गया। पेयजल योजना की विस्तृत परियोजना आख्या लागत `5266000.00 थी तथा क्रियान्वयन चरण समापन आख्या के अनुसार लागत `5148000.00 रही। बैठकों में भागीदारी करने व संचालन एवं रखरखाव धनराशि जमा करने व

करवाने में उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति के सदस्य पूरन सिंह जीना एवं देवकी भटट् की अहम भूमिका रही। वर्तमान में स्वजल समिति द्वारा प्रत्येक परिवार से प्रतिमाह संचालन एवं रखरखाव हेतु `50.00 जमा किया जाता है, जिसमें योजना रखरखाव कार्यकर्ता अर्जुन सिंह धौनी को मानदेय स्वरूप `6000.00 प्रतिमाह चैक के माध्यम से भुगतान किया जाता है। उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति हिम्मतपुर मल्ला के संचालन एवं रखरखाव खाते में `234425.00 जमा है तथा `275000.00 की सावधि जमा (एफ.डी.) आगामी भविष्य में पेयजल योजना के स्थायित्व हेतु की गयी है। समिति द्वारा दस्तावेजों का उचित रखरखाव किया जा रहा है। समिति द्वारा संचालन एवं रखरखाव हेतु नियमावली बनायी गयी है। जैसे बाहरी व्यक्तियों, समूहों, समितियों, अधिकारीगणों के शैक्षणिक भ्रमण के दौरान अपनी पेयजल योजना की जानकारी देने व भ्रमण कराने की स्थिति में `1000.00 शुल्क लिया जाता है, जिससे उनके संचालन एवं रखरखाव में वृद्धि होती है। यहॉ पर विद्युत बिल की समस्या नहीं है, चूंकि सिंचाई व पेयजल का संयुक्त ट्यूबवैल होने के कारण पेयजल का पूर्व में किये गये अनुबन्ध की शर्तों के अनुरुप आंशिक बिल आता है, जिसका भुगतान समिति द्वारा किया जाता है। शेष बिल का भुगतान सिंचाई विभाग द्वारा किया जाता है। इसके अतिरिक्त समय–समय पर आवश्यकता अनुसार समिति के सदस्य ग्राम भ्रमण कर पेयजल योजना व स्वच्छता का निरीक्षण करते हैं जिसमें आवश्यकतानुसार सुधारात्मक कार्यवाही की जाती है।

dk"kk/;{k ghjk flag fc"V के अनुसार संचालन एवं रखरखाव की धनराशि नियमित रुप से जमा किया जा रहा है, जो परिवार जमा करने में विलम्ब करते हैं, उनसे सम्पर्क कर समझाने का प्रयास किया जाता है।

lfefr lnL; ch-,l- vloky कहते हैं कि मैं समाजसेवी भाव से काम कर रहा हूॅ। संचालन व रखरखाव धनराशि जमा करने में कोषाध्यक्ष को सहयोग करता हूॅ, जिससे लम्बे समय तक हम पेयजल योजना का लाभ उठा सकें।

xkeh.k nodh HkkVV के शब्दों में पेयजल व स्वच्छता की दृष्टि में हमारा गांव सबसे आगे है। चारों ओर साफ–सफाई दिखाई देती है, सभी लोग खुश हैं। चूंकि अब किसी को पानी खरीदने की चिन्ता नहीं है। सुबह–शाम नियमित रूप से 1–1 घण्टा पानी आता है।

स्वच्छता की दृष्टि से ग्राम पंचायत खुले में शौच जाने की प्रथा से मुक्त है। वर्ष 2010–11 में ग्राम पंचायत को egkefge jk"Vªifr }kjk fueZy xke iqjLdkj से नवाजा गया है।

xke iz/kku iq"ik /kkuh xnxn होकर कहती हैं कि हिम्मतपुर मल्ला पेयजल योजना के लिए हम सैक्टर कार्यक्रम व स्वजल के आभारी हैं। हमारी ग्राम पंचायत में अच्छा कार्य हुआ है। अपनी पेयजल योजना को चलाने में हम पूर्ण रूप से सक्षम हैं।

इस प्रकार हिम्मपुर मल्ला पेयजल योजना का सफल प्रबन्धन उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति द्वारा किया जा रहा है, जो अन्य ग्राम पंचायतों के लिए प्रेरणा स्रोत है।

Jherh y{eh dqekjh] lkeqnkf;d fodkl fo'k"kK
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना, नैनीताल

सैक्टर रिफार्म से बदली ग्रामवासियों की तकदीर

vkoj gM Vd] xke ipk;r& lhrkiqj] ftyk&gfj}kj

ग्राम पंचायत सीतापुर, विकासखण्ड बहादराबाद, जनपद हरिद्वार के तोक सुभाषनगर के ग्रामवासी वर्ष 2002 में पेयजल की समस्या से बहुत परेशान थे। यह तोक ज्वालापुर व बी.एच.ई.एल. के समीप के क्षेत्र में बसा हुआ है। उस समय उक्त ग्राम की जनसंख्या 4830 थी, इसमें 33 प्रतिशत अनुसूचित जाति के परिवार निवास करते थे। सर्वप्रथम ग्राम पंचायत ने हरिद्वार नगर पालिका की पाईप लाईन से पानी लेने का प्रयास किया, किन्तु नगरपालिका ने पानी की समस्या बताते हुए असमर्थता व्यक्त की, तदोपरान्त उत्तराखण्ड पेयजल निगम के माध्यम से पेयजल योजना बनाये जाने का अनुरोध किया, किन्तु वहां से भी इण्डिया मार्का–II के 6 नग हैण्डपम्प लगवा दिये गये जो 4830 जनसंख्या के लिए अपर्याप्त थे।

जनपद हरिद्वार के पेयजल संकट को देखते हुए तत्कालीन माननीय मुख्य मंत्री जी के प्रयासों से भारत सरकार वित्त पोषित सैक्टर रिफार्म जिसके अन्तर्गत ग्रामों में पेयजल योजना का निर्माण कराया जाना था को पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में सर्वप्रथम जनपद हरिद्वार में आरम्भ किया गया। यह परियोजना मांग आधारित थी, जिसके अन्तर्गत मांग के अनुसार जनपद के ग्रामों में हैण्डपम्प, डायरेक्ट पम्पिंग एवं उच्च जलाशयों का निर्माण करवाया जाना था। इसी क्रम में वर्ष 2003 में ग्रामवासियों की मांग के आधार पर गांव का चयन सैक्टर रिफार्म के अन्तर्गत हुआ तथा पेयजल योजना बनाने का दायित्व जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई, स्वजल, हरिद्वार को दिया गया। स्वजल हरिद्वार द्वारा डिजायन जनसंख्या 7280 के लिए 70 लीटर प्रति व्यक्ति की दर से एक नलकूप 110 मीटर गहरा तथा 200 किलोलीटर क्षमता का उच्च जलाशय व लगभग 20 कि. मी. पाईप लाईन का प्रोविजन करते हुए सैक्टर रिफार्म में उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति के माध्यम से पेयजल योजना का निर्माण करवाकर ग्रामवासियों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध करवाया गया।

ग्रामवासियों द्वारा भी पूर्ण रूचि ली गयी तथा शुद्ध पेयजल घरों के अन्दर प्राप्त करने के लिए 834 व्यक्तिगत कनेक्शन लगाये गये। उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति ने सुचारू रूप से पेयजल योजना का रखरखाव किया तथा 01 अप्रैल 2015 को उनके पास `399101.90

की धनराशि शेष थी। 01 अप्रैल 2015 से 01 सितम्बर 2015 को उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता समिति ने पेयजल योजना के रख रखाव पर कुल `952454.00 व्यय किये तथा आय के रूप में `1568335.00 प्राप्त किये इस प्रकार कुल मिलाकर योजना से 05 माह में `615881.00 लाभ के रूप में धनराशि जमा की गई। वर्तमान में जनसंख्या लगभग 19000 तथा घरेलू कनेक्शन 2300 हैं। आज वर्तमान में भी उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति के पास रखरखाव खाते में `971932.20 की धनराशि अवशेष है।

सेक्टर रिफार्म की इस पेयजल योजना के सफल संचालन एवं रखरखाव हेतु 3 ऑपरेटर (`6000.00 प्रति माह), एक कैशियर (`5000.00 प्रति माह) तथा एक जलकर कर्मी (`5000.00 प्रति माह) शुल्क वसूली हेतु कर्मियों को रोजगार प्रदान किया गया है इससे स्पष्ट होता है कि यह पेयजल योजना सफलतापूर्वक संचालित हो रही है। सभी ग्रामवासी इस बात से बहुत प्रसन्न हैं कि वर्तमान योजना में लगभग `1.00 लाख सालाना की बचत होती है, इसके साथ–साथ सभी को शुद्ध पेयजल भी प्राप्त हो रहा है। यह सब सैक्टर रिफार्म के कारण ही सम्भव हो सका है। समुदाय की जागरूकता के कारण आज योजना का कुशल संचालन एवं रख–रखाव हो रहा है एवं छोटे–मोटे विवादों का निपटारा ग्राम स्तर पर ही कर लिया जाता है।

अतः यह मानना उचित होगा कि अगर समुदाय की इच्छाशक्ति में दृढ़ता हो तो वह कठिन से कठिन कार्य करनें में भी सक्षम है।

vuhrk nojkuh] lkeqnkf;d fodkl fo'ks"kK]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना,
हरिद्वार

सामुहिक प्रयास से दूर हुई पेयजल समस्या

जिला चमोली की ग्राम पंचायत मलाना, नैलकुडाव, जनपद मुख्यालय से 10 कि.मी. सड़क मार्ग तथा 1.5 पैदल मार्ग की दूरी पर स्थित है। ग्राम नैलकुडाव में 17 परिवार निवास करते हैं। ग्राम नैलकुडाव में स्वजल परियोजना द्वारा वर्ष 2012 में सैक्टर कार्यक्रम बैच–2 के तहत पेयजल योजना का निर्माण किया गया। गांव के प्रवेश द्वार में पेयजल एवं स्वच्छता के स्लोगन तथा सैक्टर कार्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी उल्लेखित की गयी है। पेयजल योजना में निर्मित स्टैण्ड पोस्ट से बच्चे विद्यालय से लौटते हुए पानी पी रहे थे। स्कूल से लौटते हुए बच्चों से पूछा गया कि यह पेयजल योजना किसने बनायी, तो बच्चों ने बताया कि हमारे गांव में स्वजल द्वारा बनायी गयी है।

बच्चों के साथ चलते–चलते बात की गयी कि आप के गांव में पानी आने से आपको क्या सुविधा मिली, तो इस पर बच्चों ने बताया कि हमारे गांव में एक मात्र पानी का धारा है, जब सुबह हम हाथ–मुंह धोनें के लिए, पानी लेने धारे पर जाते थे, तो पानी के धारे पर भीड़ लगी होती थी और हम अपने बारी का इन्तार करते थे, जिस कारण सुबह के समय हम अपनी किताब नहीं पढ़ते थे, साथ ही स्कूल के लिये हमें देर हो जाती थी, इस कारण गुरूजी हमें देर से आने पर डांटते थे। अब हमारे घर पर पानी आने से हम आराम से विद्यालय जाते हैं तथा सुबह पर्याप्त समय होने के कारण हम प्रातः अपनी किताब भी पढ़ते हैं और समय पर स्कूल जाते हैं। पानी पर्याप्त होनें से हम हर दिन स्नान करते हैं। हमारे गांव में प्रत्येक परिवार के पास शौचालय हैं और शौच के लिय शौचालय का प्रयोग करते हैं और खुले में शौच नहीं करते हैं।

गांव में भ्रमण करते हुए बच्चों ने बताया कि हम शौच के बाद हाथ साबुन से ही धोतें हैं। यदि हम शौच के बाद साबुन से हाथ नहीं धोऐगें तो हमारे हाथ में शौच के कीटाणू रहेगें जो कि पानी से साफ नहीं होते हैं, इसके लिए साबुन का प्रयोग करना जरूरी है। गांव में सर्वप्रथम कोषाध्यक्ष श्री प्रदीप बर्थवाल जी से सम्पर्क किया गया तथा योजना के बारे में जानकारी ली गयी साथ ही पेयजल योजना के दस्तावेजों का निरीक्षण किया गया। पेयजल योजना का दस्तावेज विधिवत पाया गया, जिसमें संचालन एवं रखरखाव के खाते में `10300.00 जमा हैं तथा प्रत्येक उपभोक्ता परिवार द्वारा मासिक `25.0 शुल्क जमा किया जाता है। जो कि हर तीन माह में कोषाध्यक्ष द्वारा जमा किया जाता है। दस्तावेज में मासिक शुल्क की रसीद बुक पायी गयी।

पेयजल योजना में स्टैण्ड पोस्ट का निरीक्षण किया गया, प्रत्येक स्टैण्ड पोस्ट पर पानी आ रहा था एवं सभी का प्रयोग किया जा रहा है, जिन परिवारों द्वारा निजी संयोजन लगा रखा है उनसे `600.00 सिक्यूरिटी शुल्क लिया जाता है। गांव साथ सुथरा एवं गांव में गन्दे पानी की पक्की जल निकासी की व्यवस्था है। गांव की बुजुर्ग महिला Jherh cpyh nsoh me 85 o"kZ ने बताया कि ''पहले हम एक मात्र धारे से पीने व पशुओं के लिए पानी लाते थे, जिस कारण

विशेषकर गर्मियों में पानी कम होने के कारण आपस में झगड़ा व मनमुटाव होता था। साथ ही पानी की कमी के कारण हमें पशुओं, नहाने एवं कपड़े धोनें में समस्या होती थी लेकिन अब हमारे गांव में घर–घर में पानी आ गया है तथा साफ–सफाई पर भी ध्यान देते हैं, साथ ही अपने क्यारियों में नहाने एवं कपड़े धोनें के पानी का प्रयोग साग–सब्जी में करते हैं।''

ग्राम नैलकुडाव में स्वजल परियोजना के माध्यम से निर्मित पेयजल योजना से हर व्यक्ति विशेषकर बच्चे खुश हैं और पानी के महत्व को समझते हैं तथा सभी परिवारों द्वारा जल का संग्रहण किया जाता है साथ ही पानी को बेकार नहीं बहने दिया जाता है।

y{e.k flag jk.kk] lkenkf;d fodkl fo'k"kK]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना,
चमोली

पानी की समस्या से मिली मुक्ति

ग्राम पंचायत–जिलासू, जनपद–चमोली के विकासखण्ड–पोखरी में स्थित है, जो कि जनपद मुख्यालय से 30 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित है। ग्राम पंचायत 240 परिवारों के गांव में ब्राह्मण, राजूपत तथा अनुसूचित जाति के लोग रहते हैं। ग्राम पंचायत में 1 प्राथमिक विद्यालय है तथा 1 कि.मी. की दूरी पर लगांसू गांव में इण्टर कालेज है। गांव का कुल देवता–जिलासू महोदव है।

ग्राम पंचायत–जिलासू के बगड़गाड नामक तोक में 23 परिवार निवास करते हैं। विश्व बैंक पोषित सैक्टर कार्यक्रम, स्वजल योजना के माध्यम से वर्ष 2011–12 में पेयजल योजना निर्मित की गयी। गांव में पीने के पानी के लिये लोग अलकनन्दा नदी के पानी पर निर्भर थे, जो कि गांव से 1 कि.मी. दूर था। श्रीमती सुशी देवी ने बताया कि पहले जब हमारे गांव में पानी नहीं था, तो हमें पानी की समस्या थी। गावं से नदी दूर होने के कारण पीने के पानी, मवेशियों, नहानें तथा कपड़े धोनें के लिये पानी लाना पड़ता था। बरसात के दिनों में हम गन्दा पानी पीते थे, जिस कारण हमारे गावं में बच्चों, बुजर्गों एवं महिलाओं को डाइरिया, उल्टी, पेचिस तथा खाज–खुजली इस मौसम में आम बात थी।

एक दिन सभी लोगों ने मिलकर चर्चा की कि पीने के पानी की समस्या के समाधान के लिये क्या किया जाये ? इस विषय पर श्री शिव सिंह बडियारी जी जोकि नये–नये पेंशन आये थे, ने बताया कि जनपद में स्वजल परियोजना पेयजल पर कार्य कर रही है, क्यों न हम भी एक प्रस्ताव तैयार कर जनपद कार्यालय में ले जायें और प्रस्ताव के माध्यम से अपनी समस्या बतायें। बैठक में सभी ग्रामीणों ने एक मत से प्रस्ताव तैयार किया और स्वजल कार्यालय में जमा किया। स्वजल परियोजना द्वारा हमारे गांव के प्रस्ताव को स्वीकार किया गया और वर्ष 2009 में हमारे गांव में सैक्टर कार्यक्रम के माध्यम से पेयजल योजना प्रारम्भ हुई। योजना के क्रियान्वयन में सभी ग्रामीणों ने आपसी सहभागिता से पेयजल योजना का कार्य प्रारम्भ किया और आज हमारे गांव में एक आदर्श पेयजल येाजना गांव की सहभागिता के माध्यम से निर्मित हुई है, जो कि आज भी सुचारू रूप से कार्य कर रही है।

आज हमारे गांव में 03 वर्ष बाद भी योजना में पानी सुचारू रूप से चल रहा है। परियोजना में शिव सिंह बडियारी जो कि उपसमिति के कोषाध्यक्ष हैं, के सफल संचालन में कार्य कर रही है। श्रीमती शाखा देवी तथा पीताम्बर दत्त ने बताया गया कि जब हमारे गांव में पानी की पाईपवाल खराब होती है तो ग्रामीण मिलजुल कर पाईप लाईन की मरम्मत करते है, तथा पेयजल योजना के रखरखाव के लिये दरवान सिंह जी को रखा गया है, जिससे सभी उपभोक्ताओं द्वारा प्रतिमाह `20.00 जमा राशि में से मानदेय दिया जाता है। आज संचालन एवं रखरखाव के खाते में `10500.00 जमा हैं।

बगड़गाड तोक में पानी आने से परिवारों ने साफ–सफाई पर ध्यान दिया तथा खुले में शौच की मुक्ति के लिये शौचालय का निर्माण एवं प्रयोग किया जा रहा है। आज गांव में सभी परिवारों के पास शौचालय है तथा पानी की व्यवस्था है, जिस कारण गांव में सफा–सफाई दिखायी दे रही है। गांव के लोग पानी का दैनिक उपयोग के साथ–साथ किचन गार्डन, फुलवारी तथा फलदार पौधों के लिये प्रयोग में लाते हैं, जिस कारण गांव में पानी आने से ग्रामीण प्याज, टमाटर, राई, धनियां, लहसुन, हल्दी, अदरक की पैदावार होने से बाजार पर निर्भरता कम हुई है। अनीता देवी, सुरेन्द्र सिंह, राजेन्द्र सिंह का कहना है कि फलदार पेडों से `25000.00 तथा आम से `5000.00 की वार्षिक आमदनी प्राप्त हुई है।

स्वजल परियोजना के माध्यम से गांव में पानी आने से महिलाओं की स्थिति में भी सुधार हुआ है, साथ ही साफ–सफाई, गांव में जल जनित बीमारियां कम हुई हैं और बाजार पर रोजमर्रा की खाद्य सामग्री की निर्भरता में कमी आयी है।

y{e.k fl|g jk.kk] lkeqnkf;d
fodkl fo'ks"kK]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना,
चमोली

हौसला, हिम्मत, प्रेरणा और सामूहिक सहभागिता बनती है ``मिसाल''

जल है तो जीवन है। मनुष्य के विकास की कहानी पानी से जुड़ी है। सर्वप्रथम नदी सभ्यता का उदय हुआ था। लोग नदी के किनारे बसते थे। पानी, हवा, भोजन मुख्य जरूरत है। ये न हो तो जीवन गति का तालमेल, विकास, जीवन का सुकून सब नष्ट हो जाता है। व्यक्ति की मुख्य जरूरतें पूरी न हो तो जीवन में तनाव, आवेग, उद्वेग स्वतः उत्पन्न हो जाते हैं। आज गॉवों में जहॉ लोगों के जीवन स्तर में कमी देखी जाती है, वहीं बच्चों की शिक्षा अवरूद्व है। गॉव की मुख्य समस्या जल ही है। मेरे द्वारा यह कह पाना गहरे अनुभवों के कारण सम्भव हुआ है। इस बात के मर्म को मैं जानता हूँ सिर्फ इस बारे में सोचना ही मेरी आत्मा को दूषित करता है। यह समस्या इतनी भयावह है कि, जिन्दगी की पूरी दशायें इससे प्रभावित होती हैं जैसेः

1. बच्चों की शिक्षा–दीक्षा अवरूद्व होना;
2. मानवीय संघर्षों का उत्पन्न होना;
3. मानसिक उद्वेगों में वृद्धि;
4. स्वभाव चिड़चिड़ा व आक्रामक होना;
5. पलायन की वृत्ति का उपजना;
6. सोच–विचारों का सीमित हो जाना;
7. मानसिक तनाव का मुख्य कारण;
8. सामाजिक जीवन में कमी का होना;

और ऐसा ही सब कुछ जनपद अल्मोड़ा विकासखण्ड द्वाराहाट के रिवाड़ी गॉव के लोगों की जिन्दगी में हो चुका था। लोगों से बातें करने के बाद पता चला कि बारह पन्द्रह वर्ष पूर्व यहॉ पानी बहुतायत में था। गॉव में 5–6 नौले थे। उत्तराखण्ड जल संस्थान द्वारा एल.टी.जी.टी. परियोजना के अन्तर्गत पाईप लाईनों द्वारा इनके गॉव को जोड़ा था, परन्तु दुर्भाग्य से कालान्तर में नौलें सूखने लगे। पाईप द्वारा जलापूर्ति ठप हो गयी, अब ग्रामवासियों के लिये एक मात्र स्रोत डेढ़ कि.मी. दूर गगास नदी ही थी। पानी की इस कमी ने लोगों के जीवन को प्रभावित करना शुरू कर दिया। बच्चों और महिलाओं को पानी ढ़ोना पड़ रहा था। लोग यह भी नहीं चाहते थे, कि उनके घर मेहमान आयें। पानी की किल्लत के चलते गॉव में कुछ आंशिक पलायन भी शुरू हो गया था। लोगों के जीवन में द्वन्द, संघर्ष शुरू हो गये, जिसकी समस्या पानी ही थी। लोगों के घर में शौचालय तो थे, किन्तु पानी न होने के कारण लोग गगास नदी के आस–पास शौच कर रहे थे और पानी भी दूषित कर रहे थे। इस सब के चलते गॉव में स्वच्छता का स्तर भी अपने न्यूनतम स्तर पर पहुँच गया और गॉव में गन्दगी व बीमारी का प्रकोप बढ़ गया।

पेयजल की विकट समस्या को देखते हुये लोगों का ध्यान समीप के गॉव रावलसेरा की पेयजल योजना की तरफ गया। इस पेयजल योजना से सफलतापूर्वक गॉव में पेयजल की आपूर्ति

हो रही थी तथा जिसका संचालन व रखरखाव स्वयं गॉव वाले ही कर रहे थे। इससे प्रेरित होकर रवाड़ी के कुछ लोग वस्तु स्थिति का जायजा व अधिक जानकारी लेने हेतु रावलसेरा गये। वहॉ उन्हें पता चला कि यह एक मॉग आधारित योजना है तथा इस योजना के निर्माण में लागत का कुछ हिस्सा अंशदान, श्रमदान तथा निर्माणोपरान्त संचालन एवं रखरखाव गॉव वालों को स्वयं ही करना पड़ता है। चूंकि रावलसेरा में पेयजल योजना पम्पिंग तकनीकी पर आधारित थी, जिसका कारण यह था कि जल स्रोत नीचे तथा गॉव की बसावट ऊँचाई पर थी। ठीक यही भौगोलिक परिस्थिति रवाड़ी की भी थी।

इसी समय ग्रामवासियों ने निर्णय लिया कि स्वजल परियोजना के कार्यालय जाकर मॉग पत्र दिया जाये। मॉग पत्र को देखते हुये स्वैप कार्यक्रम में रवाड़ी गॉव का पेयजल निर्माण हेतु चयन किया गया। ग्राम पंचायत में कुल 145 परिवार निवास करते थे। जिनकी कुल जनसंख्या 1183 थी। नियोजन चरण दिनांक 24 सितम्बर, 2007 से 23 मार्च, 2008 तक तथा क्रियान्वयन चरण 15 अप्रैल, 2009 से 4 मई, 2011 तक चला। क्रियान्वयन चरण पूर्ण होने के पश्चात् समस्त गॉव में पेयजल वितरण सुचारू रूप से किया जा रहा है, जिससे आज गॉव की स्थिति में काफी परिवर्तन आ गया है।

रवाड़ी पेयजल योजना में सार्वजनिक जल स्तम्भ 30 थे, लेकिन आज स्थिति बिल्कुल विपरीत है। देखने में आया है कि आज गॉव में 70 व्यक्तिगत संयोजन दिये गये हैं, जिसमें संचालन तथा रखरखाव हेतु सार्वजनिक जल स्तम्भ `50.00 प्रतिमाह, प्रति परिवार तथा व्यक्तिगत संयोजन हेतु `110.00 प्रतिमाह प्रति संयोजन लिया जाता है। इसके साथ–साथ व्यक्तिगत संयोजन के लिये `2500.00 प्रति संयोजन अग्रिम (जमानत) जमा करायी जाती है। अन्य आय के स्रोतों जैसे व्यक्तिगत भवन निर्माण, विवाह तथा अन्य सम्मेलन हेतु `300.00 प्रति दो हजार लीटर पानी उपलब्ध कराया जाता है।

संचालन एवं रखरखाव हेतु दो पेयजल अनुरक्षण कार्यकर्त्ता (SMW) नियुक्त किये गये हैं। जिनको प्रतिमाह `1500.00 मानदेय दिया जाता है। इसके साथ ही प्रतिमाह `1200.00 मानदेय कोषाध्यक्ष, उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति रवाड़ी को भी दिया जाता है। वर्तमान समय में संचालन एवं रखरखाव के सभी खर्चे जैसे बिजली का बिल, मानदेय व अन्य खर्चे को भुगतान करने के उपरान्त संचालन एवं रखरखाव खाते में `1,70,000.0 (`एक लाख सत्तर हजार रूपये) की धनराशि जमा है।

पूर्व अध्यक्ष श्री सुनील तिवारी जी का कहना था कि जल्द ही हम लोग एक जल भण्डारण टैंक (CWR) का निर्माण करने जा रहे हैं, जिसके लिये क्षेत्रीय विधायक माननीय श्री मदन सिंह बिष्ट द्वारा अपनी विधायक निधि से `3,00,000.00 (`तीन लाख रूपये) स्वीकृत किये हैं, जिसका निर्माण अतिशीघ्र होने जा रहा है।

प्रेरणा, सहभागिता व सामूहिक इच्छा शक्ति ने रिवाड़ी गॉव के निवासियों को सफलता दिलाई जो वर्तमान में दूसरों के लिये भी एक मिशाल बनी हुई है।

/keiky dkdh] vfHk;kf=dh lykgdkj]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना,
अल्मोड़ा

जाख ने लिया स्वच्छता का संकल्प

xke ipk;r&tk[k] ftyk&fiFkkjkx<

सोरघाटी पिथौरागढ़ के आंचल में जिला मुख्यालय से 12 किलोमीटर दूर बसी ग्राम पंचायत जाख में प्रवेश करते ही नयनाभिराम दृश्य, हरियाली एवं फसल से सजे खेत एकाएक ही मन को मोह लेते हैं। ग्राम के श्री प्रकाश भट्ट के अनुसार tk[k शब्द की उत्पत्ति पौराणिक अनुष्ठान जज्ञ से हुई, जिसका अर्थ ;K है, बाद में इसी tK शब्द के अनुसार इस ग्राम को जाख नाम से जाना जाने लगा। वर्तमान में ग्राम पंचायत में कुल 253 परिवार रहते हैं जिसमें 17 परिवार शौचालय सुविधा से वांछित हैं शेष परिवारों द्वारा शौचालय का प्रयोग किया जा रहा है। ग्राम पंचायत में क्षत्रिय, ब्राहमण, अनुसूचित जाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के परिवार निवास करते हैं, ग्राम पंचायत के 253 परिवारों में से लगभग 103 परिवारों का भरण पोषण नौकरी एवं 150 परिवार कृषि एवं अन्य व्यवसाय पर निर्भर हैं। यहां के परिवारों की आर्थिक स्थिति संतोषजनक होने के कारण खुले में शौच की प्रथा का प्रचलन तेजी से कम हो रहा है।

Bkl vif'k"V icU/ku] xke ipk;r&tk[k] ftyk&fiFkkjkx<

xke ipk;r d Hke.k d nkjku xke Jh jthr jke crkr g fd ^^मैंने वर्ष 2013–14 में ग्राम प्रधान एवं स्वजल परियोजना द्वारा प्रचार–प्रसार के कार्यक्रम से अभिप्रेरित होकर शौचालय का निर्माण किया] जिससे परिवार के सभी सदस्यों को खुले में शौच से होने वाली परेशानी से निजात मिली। ग्राम की एक अन्य महिला Jherh 'kkUrh nsoh द्वारा बताया गया कि ^^iyh H;kj tk.k e ij'kk.kh gFkh] tc HkVs 'kkpky; cukN Hkkr Hky gxk] jkrfcjkr C;kj tku e

fcydy Mkj uh ykx.kh**] ckVk&?kkVku e vP;ky lkQ lQkbZ N iyh ckV fgBu Y;kdk u F;kA**

xkeokfl;k d vuqlkj ''आज से छः सात वर्ष पहले बहुत कम परिवारों के पास शौचालय थे, जससे गांव के रास्ते, खेत एवं जल स्रोतों के आस–पास बहुत गंदगी रहती थी। धीरे–धीरे स्वजल परियोजना के प्रयासों से ग्रामीण जागरूक होने लगे और शौचालय निर्माण कर उपयोग करने लगे''। ग्राम प्रधान श्रीमती पुष्पा भट्ट के अनुसार ग्राम पंचायत में पेयजल की सुविधा पर्याप्त मात्रा में है 88 परिवारों के पास व्यक्तिगत घरेलू पेयजल संयोजन, 4 प्राकृतिक नौले व धारे एवं 6 सार्वजनिक पेयजल संयोजन तथा 4 स्थानों पर हैण्डपम्प लगे हैं, जिससे ग्राम में जल की उपलब्धता पर्याप्त रहती है।

युवक मंगल दल के अध्यक्ष श्री सुभाष चन्द्र बताते हैं कि स्वजल परियोजना द्वारा उपलब्ध कराये गये फील्ड टैस्ट किट के माध्यम से पेयजल की नियमित जांच व क्लोरिनेशन से जल शुद्ध रहता है, जिससे हैजा, पीलिया आदि बीमारियों की शिकायत नहीं रहती। ग्राम पंचायत में ऐलापैथिक एवं पशु चिकित्सालय होने से ग्रामीणों साफ–सफाई के लिये जागरूक हैं। ''ग्राम पंचायत में स्वजल परियोजना में शौचालय निर्माण एवं उपयोग करने हेतु लोगों को प्रोत्साहित करने का सराहनीय कार्य किया है।'' ऐसा मानना है ग्राम के श्री कैलाश चन्द्र का, उन्होंने बताया कि एक अन्य समस्या जो ग्रामीण परिवेश को पूर्ण स्वच्छ बनाने में बाधा उत्पन्न कर रही थी। वह थी कूड़ा एवं जानवरों के मल के निस्तारण की, क्योंकि ग्राम पंचायत में अधिकांश परिवार कृषि एवं पशुपालन पर आधारित हैं। मुख्यालय के समीप होने के कारण यहां पर एक छोटा सा बाजार है तथा स्टेट बैंक, मिनी बैंक, टेलीफोन एक्सचेंज, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, पशु चिकित्सालय स्थित हैं। सड़क से सम्पर्क होने के कारण इस स्थान में अन्य ग्राम पंचायतों के लोगों का आना जाना होता है, जिससे बाजार में कूड़ा करकट की समस्या रहती थी। ग्रामीणों ने ग्राम पंचायत के माध्यम एवं स्वजल परियोजना के सहयोग से ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन निस्तारण योजना वर्ष 2014–15 में शुरू की, जिसके तहत 48 कम्पोस्ट पिट, 2 वर्मी कम्पोस्ट, 3 सोख्ता गड्ढे, 115 मीटर नाली, 2 ग्रेवाटर पिट तथा सामुदायिक कूड़ेदानों का निर्माण किया गया। इसके अतिरिक्त प्रत्येक परिवार को व्यक्तिगत कूड़ेदान वितरित किये गये। अब ग्राम पंचायत में कूड़े निस्तारण एवं जल की निकासी के समाधान होने से गॉव का वातावरण साफ हो गया है।

xko e fufeZr ukyh dh rLohj

LoPN xko dk iirhd

ग्राम पंचायत में कार्यरत ''लटेश्वर महिला स्वयं सहायता समूह'' की अध्यक्षा श्रीमती मालती देवी बताती हैं कि ग्राम पंचायत में स्वजल परियोजना द्वारा स्वच्छता के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया गया है और समस्त ग्रामीण स्वजल परियोजना के सहयोग हेतु धन्यवाद देते हैं तथा साथ ही ग्राम पंचायत के नाम जाख अर्थात यज्ञ अनुसार भविष्य में ग्राम पंचायत में स्वच्छता बनाये रखने का संकल्प लेते हैं। अंततः ग्राम पंचायत का भ्रमण पूर्ण करते हुए एक सुखद अनुभूति के साथ मैंने भी बार–बार आने के वादे के साथ ग्रामीणों से विदा ली।

uoy fd'kkj jkrqyk] lkeqnkf;d fodkl fo'ks"kK]
जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई–स्वजल परियोजना,
पिथौरागढ़

पंचायत द्वारा पेयजल योजना का सफल संचालन

उत्तराखण्ड़ में औद्योगिक नगरी के रूप में पहचाने जाने वाले काशीपुर विकासखण्ड़, जनपद उधमसिंहनगर में ग्राम पंचायत – हेमपुर इस्माईल विकासखण्ड मुख्यालय से 02 किमी की दूरी पर राष्ट्रीय राजमार्ग (खटीमा – पानीपत) – 74 के किनारे स्थित है। इस ग्राम पंचायत में अनेक औद्योगिक (कारखानों) स्थित है। जो अनेक प्रकार के रसायनों का उत्पादन व प्रयोग करते है जिसके कारण पेयजल के दूषित होने की समस्या रहती है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

ग्राम पंचायत हेमपुर इस्माईल में चार तोक कुण्डेश्वरा, हेमपुर इस्माईल, हिम्मतपुर व कुआँखेड़ा है जिसमें वर्तमान समय में लगभग 1250 परिवारों की 6662 आबादी निवास करती है। ग्राम पंचायत में आबादी घनी बसी है। यहाँ के अधिकांश परिवार स्थानीय कल कारखानों में मजदूरी कर अपना जीवनयापन करते हैं। ग्राम पंचायत में सामुदायिक सहभागिता वाली पेयजल योजना के निर्माण से पूर्व यहाँ की आबादी कम गहराई वाले हैण्डपम्पों/पेयजल पर निर्भर थे साथ ही जागरूकता व व्यक्तिगत शौचालय के अभाव में अधिकांश आबादी खुले में शौच जाते थे, जिससे अनेक बीमारियों के होने की सम्भावना बनी रहती थी।

वर्ष 2010 में विश्व बैक पोषित सैक्टर कार्यक्रम बैच–1ए में स्वजल परियोजना के सहयोग ग्राम पंचायत की उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उप समिति हेमपुर इस्माईल के द्वारा ओवरहैण्ड टैंक की हेमुपर इस्माईल पेयजल योजना का निर्माण कुल रू० 47.17 लाख की लागत से पूर्ण किया गया। साथ ही ग्राम में स्थित शौचालय विहीन परिवारों को जागृत कर शौचालय निर्माण के लिए प्रेरित किया जिसमें पात्र लाभार्थियों को सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के द्वारा प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की गयी। योजना निर्माण के समय 15 सार्वजनिक जल संयोजनों का निर्माण किया गया था जिससे स्वच्छ जल की आपूर्ति ग्रामीणों को की जा रही थी।

vkojgM Vd gEij bLekby

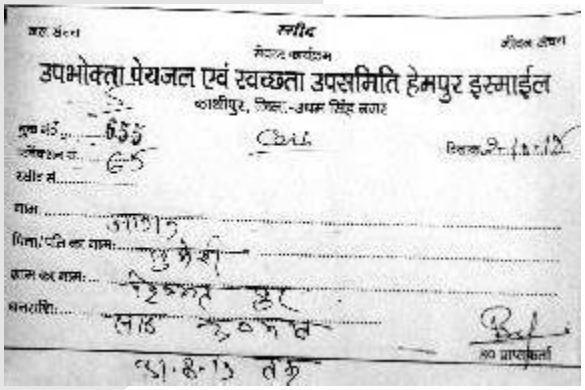

उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उपसमिति हेमपुर इस्माईल

काशीपुर, जिला:-उधम सिंह नगर

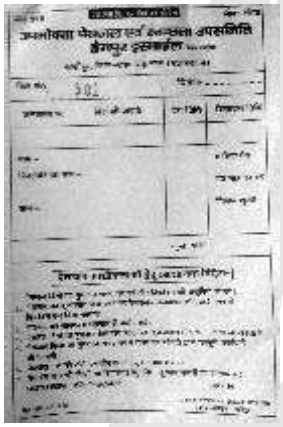

ग्राम प्रधान श्री बलकार सिंह बताते है कि ñयोजना निर्माण से पूर्व ग्रामीण पेयजल के लिए 30–40 फिट गहरे हैण्डपम्प लगाकर दूषित पानी पीने के लिए मजबूर थे, जिससे अनेक बीमारियां

होती थी। विकासखण्ड़ में हमारी पहली योजना थी जिसे ग्राम पंचायत बना रही थी जिसके लिए जहाँ हम बहुत उत्साहित थे वही हमें डर भी था कि ग्राम पंचायत योजना का निर्माण पूरा करा भी पायेगी? पर स्वजल परियोजना के सहयोग से ये योजना पूर्ण हो गयी, साथ ही निर्माण के उपरान्त लगभग 130 परिवारों को व्यक्तिगत कनैक्शन भी दिये गये। ग्राम पंचायत में योजना के रखरखाव के लिए एक कार्यकर्ता श्री महेश कुमार को नियुक्त किया गया जिसके द्वारा योजना का लगातार रखरखाव किया जा रहा है। वर्तमान समय में ग्राम पंचायत के 253 परिवारों को व्यक्तिगत घरेलू संयोजन से पेयजल आपूर्ति की जा रही है। प्रत्येक परिवार से 60 प्रतिमाह की दर से जलकर लिया जाता है। जिससे योजना का समय पर विद्युत बिल भुगतान, रखरखाव कार्यकर्ता का मानदेय, योजना का सफल रखरखाव किया जा रहा हैò।

उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उप समिति द्वारा जिनके पास व्यक्तिगत संयोजन नही है उन्हे सार्वजनिक संयोजन से आपूर्ति की जा रही है। परन्तु समिति द्वारा वर्तमान में अधिक से अधिक उपभोक्ताओं को व्यक्तिगत संयोजन से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। लेकिन इस कार्य में अधिकांश परिवारों की आर्थिक स्थिति बाधा बन रही है क्योंकि अधिकतर मजदूर परिवार है। जिसके लिए पंचायत द्वारा लोगों को स्वच्छ पेयजल एवं स्वच्छता के लिए प्रेरित किया जा रहा है जिससे उप समिति की आर्थिक स्थिति को सुद्वढ कर योजना का निरन्तर सफल संचालन एवं रखरखाव किया जा सके। समिति के समक्ष मुख्य समस्या आज भी विद्युत बिल का भुगतान रहता है क्योंकि समिति को सामुदायिक सहभागिता की योजना के बावजूद व्यवसासिक दरों पर विद्युत बिल का भुगतान करना पड़ता है। फिर भी समिति द्वारा वर्तमान समय तक के सभी विद्युत बिलों का भुगतान किया गया है जो लगभग रू० 5.00 लाख से अधिक है।

हेमपुर इस्माइल बनी टैक्स लेने वाली पहली पंचायत

ग्राम पंचायत हेमपुर इस्माईल में कुल 1250 परिवारों में से वर्तमान में 1018 परिवारों द्वारा व्यक्तिगत शौचालय का निर्माण कर प्रयोग किया जा रहा है। चूंकि ग्राम पंचायत व उसके आस–पास स्थित कारखानों में मजदूरी करने के लिए बाहर से मजदूर आते रहते हैं। जो रोजगार के लिए यही स्थाई रूप से बस जाते हैं जिसके कारण ग्राम पंचायत की आबादी दिन–प्रतिदिन

बढ़ती जा रही है। ग्राम पंचायत द्वारा वर्ष 2014–15 में स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के अन्तर्गत एक सामुदायिक शौचालय का निर्माण किया गया है। जिसका शौचालय विहीन परिवार/मजदूरों के द्वारा प्रयोग किया जा सके एवं ग्राम पंचायत को स्वच्छ रखा जा सके। ग्राम पंचायत द्वारा अधिकांश मार्गों को पक्के मार्गों में परिवर्तित किया गया है जिनमें निकास नालियों की भी व्यवस्था की गयी है। जिससे जल निकास की समस्या को दूर किया गया है। आज ग्राम में स्वच्छता की स्थिति पहले की तुलना में काफी संतोषजनक है। पंचायत द्वारा स्वच्छता के स्तर को बनाये रखने के लिए ग्राम में सफाई कर्मी की नियुक्ति की गयी है जिसके वेतन आदि व्यय के लिए ग्राम पंचायत में स्थित व्यवसाय प्रतिष्ठानों पर माह सितम्बर, 2015 से ''स्वच्छता कर'' लागू किया गया है।

ग्राम पंचायत हेमपुर इस्माईल में अधिकांश आबादी कारखानों में मजदूरी करने वाले व गरीब परिवारों की है साथ ही व्यवसायिक दर पर विद्युत बिल का भुगतान करना होता है जिससे विद्युत बिल अधिक रहता है जिसके कारण उप समिति के समक्ष आर्थिक समस्याओं के होने के बावजूद ग्राम पंचायत द्वारा अपनी पेयजल योजना का विगत 05 वर्षों से सफल संचालन किया जा रहा है जो ग्रामीणों की सामुदायिक सहभागिता तथा पंचायत राज व्यवस्था के तहत ग्राम पंचायत के क्षमता विकास के फलस्वरूप सफल नेतृत्व के साथ ही पंचायतों के सशक्तीकरण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है तथा उन सरकारी संस्थाओं के लिए एक आइना भी है जो भारी भरकम राजकीय सहायता/धन (बजट) प्राप्त कर भी हमेशा नुकसान (घाटे) में रहने का रोना–रोते है।

उपभोक्ता पेयजल एवं स्वच्छता उप समिति हेमपुर इस्माईल के द्वारा संचालित पेयजल योजना का समिति द्वारा सफल संचालन एवं रखरखाव किया जा रहा है साथ ही निरन्तर समुदाय को स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। जो आस–पास की अन्य ग्राम पंचायतों को भी सामुदायिक सहभागिता के लिए प्रेरित करेगी।

ckyÑ".k eSydkuh
सामुदायिक विकास विशेषज्ञ
डी०पी०एम०यू०, स्वजल
उधमसिंहनगर

स्वच्छता की प्रेरणा ग्राम पंचायत – हल्दी

जनपद उधमसिंहनगर के सीमान्त विकासखण्ड़ खटीमा में वर्ष 2014 में नवगठित ग्राम पंचायत हल्दी, उत्तरप्रदेश की सीमा पर विकासखण्ड़ मुख्यालय से लगभग 08 किमी0 दूरी पर स्थित है। अनुसूचित जाति व सिक्ख बाहुल्य इस ग्राम पंचायत में 02 राजस्व ग्राम हल्दी व भैसिया है जिसमें कुल 262 परिवारों की 1026 जनसंख्या निवास करती है यहाँ के ग्रामीणों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं मजदूरी है।

ग्राम पंचायत के गठन के समय कुल 262 परिवारों में से केवल 127 परिवारों के पास ही व्यक्तिगत शौचालय की सुविधा उपलब्ध थी तथा 135 परिवार शौचालय विहीन थे। जो खुले में शौच जाते थे जिसके कारण ग्राम में गन्दगी रहती थी। जिसका मुख्य कारण लोगों में जागरूकता की कमी व साथ ही गरीब परिवारों की आर्थिक स्थिति भी इसका एक कारण थी।

j.kuhfr r|;kj djr LoPNrk nr ,o ipk;r InL;

स्वजल परियोजना द्वारा जनपद में संचालित स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) की विभिन्न कार्यशालाओं एवं बैठक से प्रेरित होकर युवा ग्राम प्रधान श्रीमती संगीता देवी व उनके पति श्री चन्द्रपाल ने अपनी ग्राम पंचायत को खुले में शौच से मुक्ति दिलाने की मुहिम प्रारम्भ की। सर्वप्रथम ग्राम पंचायत द्वारा अपने ग्राम के ही श्री कुलदीप सिंह को स्वच्छता दूत नियुक्त किया साथ ही ग्राम पंचायत के अन्य सदस्यों से भी इस कार्य में सहयोग लिया गया व ग्राम पंचायत में घर–घर जाकर लोगों को स्वच्छता के लिए जागरूक किया गया।

ग्रामीण श्री चन्द्रपाल व स्वच्छता दूत श्री कुलदीप सिंह बताते हैं कि हमने घर–घर जाकर लोगों को स्वच्छ भारत मिशन के बारे में जागरूक किया एवं जिस परिवार में शौचालय नहीं है उस परिवार को शौचालय बनाने के लिए उत्साहित किया एवं उनके शौचालय बनाकर उपयोग करने

पर परिवार के मुखिया को रू० 12000.00 की प्रोत्साहन राशि दिये जाने की जानकारी दी। इस कार्य में हमें उप प्रधान अमरीक सिंह का भी पूरा सहयोग प्राप्त हुआ।

ग्राम पंचायत में धीरे–धीरे लोगों द्वारा व्यक्तिगत शौचालय का निर्माण किया जाने लगा। ग्रामीणों को जागरूक करने के लिए स्वजल परियोजना के कार्मिकों द्वारा समय–समय पर ग्राम पंचायत का भ्रमण किया गया। ग्राम पंचायत की इस पहल को माननीय मुख्यमंत्री श्री हरीश रावत जी द्वारा मान्यता प्रदान करते हुए दि० 17.04.2015 को ग्राम पंचायत में शत–प्रतिशत शौचालय निर्माण के लिए अपनी घोषणा में शामिल किया गया। ग्राम पंचायत में वर्तमान समय में ग्राम पंचायत के सभी परिवारों द्वारा व्यक्तिगत शौचालय का निर्माण कर उसका उपयोग किया जा रहा है। ग्राम पंचायत द्वारा माह सितम्बर 2015 में पुनः सर्वेक्षण कर सभी घरों में शौचालय होने की पुष्टि करते हुए ग्राम पंचायत को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया गया। साथ ही इसकी निरन्तर निगरानी करने का निर्णय लिया गया।

ग्राम पंचायत के खुले में शौच से मुक्त होने पर पंचायत द्वारा दि० 28.09.2015 को एक रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय सांसद श्री भगत सिंह कोश्यारी, स्थानीय विधायक श्री पुष्कर सिंह धामी, नानकमत्ता विधायक श्री प्रेम सिंह राणा उपस्थित थे जिसमें सार्वजनिक रूप से ग्राम पंचायत को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया गया।

Xkke iapk;r dk [kys e 'kkp l eDr dju gr dk;'kkyk

ग्राम पंचायत को खुले में शौच से मुक्त करने हेतु आयोजित कार्यशाला में मुख्य अतिथि माननीय सांसद भगत सिंह कोश्यारी, नैनीताल ने सभी से स्वच्छता को अपनी आदत में सम्मलित करने की अपील करते हुए कहा कि स्वच्छता बनाये रखना हम सभी की जिम्मेदारी है इसमें सबको सहयोग करना चाहिए।

jxkjx dk;Øe

आज ग्राम पंचायत में सभी परिवार शौचालय का प्रयोग करते है। लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता निरन्तर बढ़ रही है जो ग्राम पंचायत की मुहिम का ही प्रमाण है। जिससे आज ये ग्राम पंचायत खुले में शौच की प्रथा से मुक्त है। इस सीमान्त ग्राम पंचायत की मुहिम का असर क्षेत्र की अन्य ग्राम पंचायतों के लिए भी प्रेरणादायक का कार्य करेगा जिससे स्वच्छता का संदेश घर–घर पहुँचाकर स्वच्छ भारत की परिकल्पना को पूर्ण किया जा सके।

ckyÑ".k eydkuh
सामुदायिक विकास विशेषज्ञ
डी०पी०एम०यू०, स्वजल
उधमसिंहनगर

झाड़ू का मान

सदा हाथों में रहने पर भी,
कब मिला था मुझे इतना मान।।

दिखा दी मैंने अब अपनी आन,
तभी कहते हैं सबका करो सम्मान।।

कर्म छोटे–बड़े होते हैं,
सबके दिन कैसे फिरते हैं।।

ये भी मैंने दिखा दिया है,
झाड़ू से पहचान बनाना।।

बड़े–बड़े घरानों ने माना,
स्वच्छता का साधन मुझे है जाना।।

पौ फटते ही मेरा काम,
सबसे पहले मेरा नाम।।

अब मुझे नहीं है गम,
मैं किसी से नहीं हूँ कम।।

मेरी ही छत्रछाया,
देगी तुमको निरोगी काया।।

Mk- xhrk iir]
प्रवक्ता, राजकीय बालिका इण्टर कालेज, ऐंचोली,
पिथौरागढ़

स्वच्छ पेयजल

पानी ही जीवन है,
स्वच्छता उसकी जीवन शक्ति है।
एक–एक बूंद बचानी है,
जल बिन धरती सूनी है।।
स्वच्छता से स्वच्छता पैदा करनी है,
पेयजल की महिमा है।।
रक्त में उसकी गरिमा है,
उबालकर पियो, खूब पियो।।
ढक कर रखो, छानकर पीयो,
स्वच्छ रहो, जल स्वच्छ पियो।।
पवित्र जल स्रोतों में,
नाले न डालो।।
कचरा, कूड़ा दूर भगाओ,
स्वयं चमको भारत चमकाओ।।
स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत।

Mk- xhrk ir]
प्रवक्ता, राजकीय बालिका इण्टर कालेज, ऐंचोली,
पिथौरागढ़

ओवरहैड टैंक, नारायणपुर मुलिया,
नैनीताल

क्लोरीनेशन रूम, नारायणपुर मुलिया ,
नैनीताल

अभी कुछ बाकी है...

जब भी मैं आते–जाते रास्तो पर गंदगी प्रदूषण देखता हूँ,
सोचता हूँ, क्यों फैलातें हैं लोग गंदगी,
कैसे हो गए हैं इतने गैर जिम्मेदार
कि देख नहीं पाते उसके दुष्परिणाम।

इस धरती को स्वर्ग बनाने के लिए कोई कुछ करता क्यूँ नहीं।
फिर सोचता हूँ, क्यों न मैं ही साफ कर दूँ,
पर सोचता हूँ लोक क्या कहेंगे।
आड़े आ जाता है मेरा पद सामाजिक प्रतिष्ठा और रीति रिवाज।

क्यूंकि हम समझते है
खुद को एक अधिकारी, डॉक्टर, इंजीनियर,
हिन्दू, मुसलमान उँच और धनवान।
क्यों हम भूल गए हैं, इस परिवार समाज से भी पहले मैं हूँ।

इस प्रकृति का एक हिस्सा,
प्रकृति नहीं रहेगी तो खत्म हो जाएगा हमारा भी किस्सा।
फिर सोचता हूँ, यहां हर कोई समझता है,
सच क्या है और क्या है झूठ, सही क्या है और क्या गलत।

हमारे पूर्वजो ने हर अच्छी आदत को सराहा और संजोया है।
हर अच्छी सोच को बढ़ाया और फैलाया है।
प्रकृति ने भी अपनी खुबसूरत और निपुण
रचना मात्र को ही बचाया और संजोया है।

इसी का नतीजा है,
हम सब मानव और समस्त जीव हमारे बीच का समन्वय,
फिर हम सब कैसे भूल गए है, अपने उस गुण को हुनर को,
जिसने हमें हमें बनाया।

फिर पूछता हूँ खुद से,
क्या हममें इस दुनिया को स्वर्ग बनाने का हुनर बाकी है,
क्या हममें मानव जाति को आगे बढ़ाने की समझ बाकी है।
हाँ जरूर है।

एक छोटा सा अंश ही सही, एक बीज रूप ही सही
चले हम सब मैं से ऊपर उठें
और हम सब उस पौधे को एक विशालकाय वृक्ष बनाऐं
इस धरती को फिर से स्वर्ग बनायें।

(डा0 रंजीत कुमार सिन्हा)
परियोजना निदेशक, स्वजल परियोजना